

उसने कहा

(दोस्तक के छः चमर चित्रों से सुसज्जित)

लेखक

सुलील जिघान

प्रचारक

नरेन्द्र घोषरी डी० लिट्०

भारती एड्युकेटिव प्रकाशन

गाजियाबाद उत्तर प्रदेश

प्रकाशक

(श्रीमती) रीता चौधरी

भारती एडोसिप्लन पब्लिकेशन्स याजियाबाद उ० प्र०

प्रथम संस्करण : १९४७

मूल्य दो रुपये

मुख्य वितरक

राजकमल पब्लिकेशन्स लि०

४ प्रिन्स बाजार दिल्ली

पटना इलाहाबाद बम्बई

मुद्रक

श्री गोपीनाथ सेठ

दलीन प्रेस दिल्ली

महाकवि खलील जिब्रान

एक परिचय

कवि ज्ञानी और चित्रकार खलील जिब्रान (Khalil Gibran) का जन्म सन् १८८३ में सीरिया देश के नाउप्ट सैबमान प्रांत के बशेरी (Bsherra) नामक नगर में हुआ था। सैबमान बही प्रांत है जहाँ मूरियों के एक पत्थर पैदा हो चुके हैं। मात्र संगार में कवि जिब्रान 'सैबमान का हमरहुत' के नाम से विख्यात है। बारह बय की आयु में ही उनके पिता उन्हें लेकर योरोप-यात्रा पर निकल पड़े थे। करीब दो बयें बाद वापस सीरिया पहुँचे और कवि को बैबत नगर के 'अहरमत अल रिहमत' नामक प्रतिष्ठित विद्यालय में दाखिल करा दिया। सन् १९०३ में वे पुनः हमरीबा गय और पाँच बयें वहाँ रहकर अंत वृत्ति में लगे। एक देरस में जिब्रान ने चित्र-कला का आद्यतन किया। सन् १९१२ में वे फिर हमरीबा लौट गये और अरत-पर्यंत श्रमिका में ही रहे।

सीरिया में रहकर अशोक दरवाजे भादा में एक पुस्तकें लिखी और वहाँ उनकी पुस्तकों का बहुत आदर हुआ। सन् १९१८ के लयभय उन्होंने अंग्रेजी में भी लिखना आरम्भ किया। तभी से उनकी अनेक कवि की कला टीली लयें अद्भुत रूप दिखारों की कदाति न केवल अरबी

अपना प्रियेजी भाषा भाषी जनता में अविशुद्ध अनुवाद द्वारा सारे योरोप एवं एशिया में फैल गई। विश्व की तीस से अधिक औचित्य भाषाओं में उनकी पुस्तकों के अनुवाद हुए और वे 'औसतों सभी के इति' कहे जाने लगे।

कवि विज्ञान की समस्त पुस्तकें उनके स्वयं बनाये हुए चिन्तों से अिनूयित हैं। इन चिन्तों का प्रबलन संसार के सभी देशों के मुख्य नगरों में ही हुआ है। उनकी तुलना अमरीका के महान् कसाकार अगस्त रोडिन एवं बिलियम ब्लक से की जाती है। एक बार स्वयं अगस्त रोडिन न कवि विज्ञान से अपना विश्व बनवाने की इच्छा प्रकट की थी और उसी से अलीस विज्ञान की पहला अद्वितीय लेखक के साथ-साथ महान् अिनकारों में होने लगी।

अन्होंने अंग्रेजी तथा अरबी में अनेक पुस्तकें लिखी हैं। उनमें से कुछ के नाम इस प्रकार हैं—

दि मंड मैन	अील्स दि अन् अॉब मैन
दि फौर एनर	दि अर्थ पाइस
दि प्राफेट	दि बाण्डर
सैण्ड एण्ड अोन	दि गार्डन अॉब दि प्राफेट
अोक्रेस अॉब दि हार्ट	डीवर्ट एण्ड नाकटर
रिप्रिड्स रिबैलियस	

कवि विज्ञान इस समय संसार में मौजूद नहीं हैं। १० अग्रेज १९३१ ई को ४५ वर्ष की अवस्था में उनकी अहमद अी अया अिन्नु उनकी रचनाएं संसार में अरब अमर-अमर रहेंगी। उनके अिचार अान्ति अनुभूता एवं अिद्वयकानुत्व का अत्येक अरब अनुभूते रहेंगे।

दो शब्द

विज्ञान की यह एक और पुस्तक हिन्दी-पाठकों की भेंट है। सन १९३० में पत्रों के द्वारा विज्ञान की ओर आकर्षित हुआ। 'प्राफ़ेक्ट' को पढ़कर तथा कि विज्ञान में एक ऐसी व्यास हृदय में पड़ा कर ही है जिसे जहाँ का साहित्य मिला सकता है। ऐसे पुनः सवार हुई कि उनकी जो भी पुस्तक अंग्रेजी में पा सका खोज निकाली और बार-बार पढ़ी। हिन्दी में भी कई पुस्तकों के अनुवाद पढ़े और तभी से विज्ञान के मयनों में शामिल हो गया। सन १९३२ में मेरा बहुतसा विज्ञान का अनुवाद 'घसान' प्रकाशित हुआ और तब से निरन्तर विज्ञान के साहित्य का अनुसंधान कर रहा हूँ। ये ही बात है कि उनका सम्पूर्ण साहित्य हिन्दी में भाषा में प्राप्त नहीं है। एक घरसा हुआ उनकी एक पुस्तक 'माइन ऑन दि प्राफ़ेक्ट' पा गया। उसे जिनका बहुत हूँ उसीमें जो जाता हूँ। जाकर भी उसका अनुवाद हीन नहीं कर पाया। अब वह अपना पूरा हुआ और बैगिए पूरा हुआ तो आता से भी अधिक। सम्भवतः विज्ञान की हिन्दी में यह बहुत ही पुस्तक होगी जो लक्षित तथा सचित्र प्रकाशित हो रही है—एकदम बेटी ही जती कि मूल अंग्रेजी में है। भारतीय एमोसिएशन प्रकाशन का यह प्रयास सराहनीय है। तिस पर भी अन्य अधिक नहीं रचा गया है।

जात होता है कि यह पुस्तक विज्ञान ने अपनी विश्वविख्यात पुस्तक 'प्रायोज' की परिधि के रूप में लिखी। इसकी शक्ती तथा हीचा एक-बन उतनीकी भांति है। ऐसा जान पड़ता है कि जो कुछ 'प्रायोज' में सूट गया वह विज्ञान ने इस पुस्तक में संवारकर लजा दिया और इस प्रकार अपने 'अन्तिम सम्बन्ध' को पूरा किया।

यही 'रहस्यमय पूर्व' इस पुस्तक के हृदय में भी व्याप्त है जिसके लिए विज्ञान प्रसिद्ध है। आरम्भ से ही पाठक उनकी नीपती हुई सादगी, भीषण बुद्धक-प्रसिद्ध तथा अन्त विचारों की अनुभव करने मगता है। विज्ञान के पुरातन विचार आज के मनुष्य की समस्याओं का इन प्रस्तुत करते हैं और उनकी काम्यमय लेनी आज की काम्य-पद्धति से भी नहीं आने है। उनके अली एक साथ ही प्रकृत किन्तु कोमल भयानक किन्तु ममुर प्राणियों में भी किन्तु आनन्ददायक और सारे किन्तु लुप्तगी सभी तरह के भाव प्रकट करने में सफल है। कितने भी पूर और उनसे हुए विचार इस सादगी के कारीगर के लिए कठिन नहीं है। रहस्यमय विचारों को अपनी छात्रों की शक्ती में सजाकर विज्ञान पढ़ने वाले को कभी हास्य तो कभी खल और कभी आनन्द तो कभी अन्त पीड़ा के भूले में लुप्तते रहते हैं। उनके गहन विचार इन्हीं सीधे-साधे शब्दों की पोशाक पहनकर सीधे मनुष्य के हृदय में उतर जाते हैं और सीधे ही उसकी समस्त शक्तियों पर अधिकार लमा लेते हैं।

कैसी अजीबो-गरीब बात है विज्ञान ने जो बर्षों पहले लिखा वह आज भी उतना ही महत्वपूर्ण तथा सत्य है, अपितु चित्तकर और भी कुछ सीखा तथा घोषरके बन पया है। उन्होंने भी तो लिखा है "और सत्य के जन्म से पहले भी सत्य तो सत्य ही था।" हमारी सामाजिक कुरीतियों का विचार उनकी कलम न कित्त लुकी से किया है। मामूम पड़ता है कि हमारे लिए ही उन्होंने लिखा है "मेरे मित्रों और मेरे हमराहियों। यह बात बर्फीय है जो कि (अब) बिज्जातों से कुछ किन्तु

धर्म से घृण्य है।" और बयनीय है वह देश जोकि धनक टुकड़ों में
 बँटा है और प्रत्येक टुकड़ा अपने की एक देश समझता है।" वास्तव
 में विद्यान की सैखनी किसी एक काल अथवा देश की नहीं है। वह तो
 हर काल और हर देश के लिए एक ऐसा अमर साहित्य बना गई है
 जिसे पढ़कर अपने बाली संतानों बिन्द-बन्धुत्व ताय तथा ईश्वर को
 जान पायेंगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि मनुष्य एक-एक दिन विद्यान क मरने
 विद्यार्थों की अबाध अचनापना और "उत्त दिन" विद्यान लिखने ह
 'संसार विखणी की मुसीबतों और हृदय की खीझ-मुद्दरों से नहीं
 अपितु जीवन के अानुषों तथा हास्य के संगीत से परिपूर्ण होगा। किन्तु
 उनका रहना है कि यह सभी हो सकेगा जबकि मनुष्य प्रेम के मूल्य
 अानुषों क अानन्द तथा मृग्य के संगीत को पहचान लेता।

हिन्दी-वाक्यों द्वारा विद्यान के संहितय का इतना आरर देकर
 मुझे मरोसा है कि विद्यान हिन्दी में भी अचना बसा ही स्थान बना संग
 बँता कि अंग्रेजी में।

गाबियाबाद

नरन्द्र शीपरी

२ दिसम्बर १९२६

5



विषयीय के माह में जोकि यात्रागारों का महोत्सव होता है धनेश्वरी में एक एवं (सबका) प्रिय धनमुस्तफ्त, जोकि धपने दिन का स्वयं ही मध्याह्न था, धरनी जम्भूमि के द्वीप को लौटा ।

घौर जब उसका पहला बम्बरगाह के निचट पहुँचा तो वह जहाज के धपने भाग में (धातुकता से) रुका हो गया । उसके नाबिकों ने उसे चारों घोर में घेर लिया घौर (उस समय) उसके हृदय में स्वदेय लौट घाने की लुपी हिलोरें ले रही थी ।

घौर तक वह बोला घौर (ऐसा भया) मानो भागर उसको धाबाज में समा गया हो । उसने कहा "देसते हो (यह है) हमारी जम्भूमि का द्वीप । यहीं तो पृथ्वी ने हमें उमारा (जम्मा) या एक पीठ एवं एक पहेली बनाकर—एक पीठ आकाश की ऊँचाई में घौर एक पहेली पृथ्वी की गहराई में । घौर वह, जोकि आकाश तथा पृथ्वी के बीच में है पीठ की चँलावेया घौर पहेली को बुझावेया किन्तु हमारी उत्पत्ति को समाप्त न कर पावेया ।

"माघर फिर हमें एक बार लट की सीप रहा है । हम उसकी धनेक कहनों में एक कहर ही तो है । धपनी बाली को धाबाज देने के लिए वह हमें बाहर भेजता है किन्तु हम एसा कैसे कर सकते हैं जब तक कि हम घाने हृदय की एककता पण्डर एवं रेत पर न लौड़ (घिस) लें ।

‘क्योंकि नाविकों एवं समुद्र का यही कानून है—यदि तुम स्वतन्त्रता चाहते हो तो तुम्हें झुहरे में परिवर्तित होना पड़ेगा। तिराकार हमेशा धाकार घण्टा करता है जैसे घण्टा पर घण्टा भी तो (एक दिन) सुबं एवं चरमा बन जायेंगे। और हम जिन्होंने बहुत-कुछ पा लिया है, और जो सब घपने द्वीप को लौट आये हैं—कठोर सचि को हर्षे ती फिर एक बार झुहा बन जाना चाहिए और प्रारम्भ का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। और एसा कौन है जोकि (धाकार की) ऊँचाइयों तक भी सके और ऊँचा उठ सके सिवाय उसके जोकि धाकारता एवं स्वतन्त्रता में बिखरकर समा जाय ?

‘सबैव हर्षे उठ (पर पहुँचने) की चाह रहेगी जिससे हम या सके और कोई (हमें) तुल सके। किन्तु उध लहर का क्या जोकि वहाँ टूट जाती है वहाँ सुनने के लिए कोई काल न हो ? यह हमारे धन्वर धनमुना ही तो है जोकि हमारे गहरे सन्ताप (के बावों) को भरता है वहाँ तक कि यह भी धनमुना ही है जोकि हमारी धात्मा को काट छोटकर धाकार देता है और हमारे धाम्य को डालता है।

तब उसके नाविकों में से एक धामे धामा और बोला प्रभु, हर्षे इस धन्वरबाह तक पहुँचाने के लिए धाप हमारी इच्छाओं के नायक बनें। और देखिए, धब हम (वहाँ) पहुँच पए हैं। फिर भी धाप शोक की बाते करते हैं और ऐस हृदयों की जोकि (मानो) टूटने वाले हैं।

और उसने उस (नाविक) को सत्तर दिया और कहा ‘क्या मैंने स्वतन्त्रता की बात नहीं कही, एवं झुहरे के विषय में जोकि हमारी (सबसे) बड़ी स्वतन्त्रता है ? फिर भी एक पीड़ा में ही मैं घपने जम्म के द्वीप की यह बाधा कर रहा हूँ जैसे एक इत्या से बना प्रेठ उन लोनों के सम्मुख सिर झुकाने धाता है जिन्होंने उतकी हृत्या की थी।

और (तब) एक और नाविक उठा और बोला ‘भाह देखिए, समुद्र की बीबार पर (उड़े हुए) लोनों के झुम्ब। घपनी धामोदी में ही उम्हें धापके धामे का दिन एवं बड़ी तक का पठा जग गया है।

घरनी प्रिय धाकात्रा को बिबे बे भरने सेतो एब घपूर क बगीचा में से धाकर इकट्ठा हो ग- हे धापके स्वापत क लिए ।”

घौर घब घसमुन्तप्य मे दूर सोगों के भुच्छों पर दृष्टि बानी ।
उमका हृदय उनकी धाकासाधों से भनीजाति परिचित बा । घौर बहु सांत हो गया ।

घौर तब सोगों की तेब पुनार सुभाई पड़ी । बहु धाबाब धी (पुछानी) साहपारों की एवं प्रापनाधी की ।

घौर उसने घपने नाबिकों की धौर बेबा तथा कहा घौर मे इनक लिए क्या लाया हूँ ? एक दूर देन में म एक सिकारी बा । सत्य एवं धरित के साथ मीने बे सब स्वर्भ-बाण समाप्त कर दिए जौकि इन्होंने मुझ विये बे, किन्तु मे तो कोई भी धिकार घपने साथ नहीं लाया (क्योंकि) मीने बाणों का पीछा नहीं किया । सम्भवतः वे जल्पी पक्ष के पंखों के धिकारों में छलमे हुए धाकाघ में दीड़ रहे हों घौर वृष्ठी वर कत्री म धिरें घौर सम्भवतः व एधे मनुष्यों के हाथ लग गए हों जिन्हें घपनी खोटी एवं मन्त्रि के लिए उनकी (धायक) धावन्धकता थी ।

“मं नहीं जानता कि उन्होंने घपनी उद्दान नहीं पुरी की है किन्तु मे इतना (धवरय) जानता हूँ कि उन्होंने धाबाब में घपनी दीड़ धरित कर दी है ।

इसीलिए ही प्रेम का हाथ धमी मी मेरे ऊपर है घौर तुम मेरे नाबिको धमी मी मेरी दृष्टि की नाब गते हो । घौर मे मुक नहीं रहूँगा । घौर जब मेरे बन्ध पर ऋतुधों का हाथ होया तो मे बीनूँगा तथा जब मेरे घोट घाय की ली से जलते होंगे तो मे नाडूँगा ।”

घौर उन (नाबिकों) के हृदय में सतबनी मय गई क्योंकि उसने ऐसी बाने कही । घौर (उनमें से) एक बोला “अमु हमें नब धिरा से घौर इतिहा, बराकि धापवा ररउ हमापी नाडियो में बहु रजा है घौर हमापी मांत धारपी मुयक से महक गही है..हम (मब) नमनेगे ।”

तब उसने उसे उत्तर दिया। बाबू उसकी बास्ती में थी। उसने कहा "क्या तुम मुझे एक शिक्षक बनाने के लिए मेरे जन्म-द्वीप पर लाये हो? क्या धनी एक बुद्धि ने मुझे कैद नहीं किया? क्या मैं बहुत छोटा तथा पाल्थविक घस्सू हूँ कि बोनू तो केवल अपने ही विषय में जोकि नहरे का गहरेपन को पुकारने के समान है।

"श्री बुद्धि बूढ़ा है वह (उसे) मन्थन के प्वाले में डूँडे, प्रथमा साल मिट्टी के टुकड़े हैं। मैं तो धनी भी पायक हूँ। मैं तो धनी भी पृथ्वी (के गीतों) को माऊंगा और मैं तुम्हारे भूँसे हुए सपनों को बाऊंगा, जोकि (एक) मित्रा से (झुंघरी) मित्रा के बीच के दिन को चसकर पार करते हैं। किन्तु मैं समुद्र की ओर निहारता रहूँगा।"

और जब बहाब ने बन्दरगाह में प्रवेश किया और समुद्र की वीचार के पास पहुँच गया। इस प्रकार प्रथमस्तथा अपने जन्म द्वीप में पहुँचा और एक बार फिर अपने सोनों के बीच बढ़ा हुआ। और एक भारी घाबाब उन (लोगों) के हृदयों में से स्फुटित हुई जिससे कि वह लौटने का एकाकीपन उसके घन्वर हिल डठ।

और वे सब लामोस से उसकी घाबाब सुनने के लिए, किन्तु उसने कुछ भी न कहा, क्योंकि बाबुपारों की पीड़ा ने उसे और रखा था। और अपने हृदय में उसने कहा "क्या मैंने कहा है कि मैं बाऊंगा? नहीं मैं तो अपने सोनों को केवल जोस ही सकता हूँ कि जीवन की घाबाब घागे घाये और प्रसन्नता एवं सहारे के लिए बाबू में फैल बाव।"

तब करीमा जोकि बचपन में उसके साथ उसकी माँ के बपीने में खेती की घाये घाई और बोली "बारह वर्ष तुम अपना कैहरा हमसे छिनाने रहे हो। और बारह वर्ष हम तुम्हारी घाबाब के मुझे तथा प्वासे रहे हैं।"

और पाल्थविक कोमल बुद्धि से उसने उसे देखा क्योंकि वह ही भी जिसने (उसकी अनुपस्थिति में) उसकी माँ के पसकों को बन्द किया

या जबकि मृत्यु के दशक वर्षों में उसे समेट लिया था ।

धीरे उत्तर में उन्होंने कहा, “बारह बर ! तुम कहती हो बारह बर करीमा ! मैं अपनी धाकासाधों के सिंघारों को दृष्टि से नहीं मारता धीरे न ही मैं उनकी गहरी धावाज से चौंकाता हूँ क्योंकि प्रेम जब धर के प्यार में उभरता हो जाता है तो समय की माप एवं समय की धावाज को भी गूँथ बना देता है ।

“कुछ ऐसे लए होते हैं जोकि विषयों की मरियों को धरन में समा लेते हैं । धीरे जुबाई क्या है मलिन्य की गूँथता है ! सम्भवतः हम तो जुदा ही नहीं हुए थे ।”

धीरे धनमुत्पन्न ने लोपों पर (एक) दृष्टि डाली । उसने ऊँच ममी को (एक बार) देखा—मुदा तथा बड़े बलवान धीरे हँसोड़े ने जोकि बापु तथा मूर्ध के मर्मक में पुमापी हो गए थे धीरे ने तिनके बहरे पीले थे धीरे उन ममी के बेहरोँ पर इच्छाओं एवं दर्शनों की माप धरित थी ।

धीरे (उनमें से) एक बाता “अमु जीवन न हमारी धागाधों एवं धाकासाधों के माप कः स्वरहार किया है । हमारे हृदय बुझी है धीरे हम कुछ नहीं समझ पाते । मैं धारने धार्यना करना हूँ कि धार हमें मान्यना दें धीरे हमारे दुगों का धर्य मरभार्य ।”

उसका हृदय दयालुता से द्रविण हो उठ्य धीरे बह बोला “जावन समस्त जाविठ बलुधों में बड़ा है जैसे कि सुन्दरता के पंख मगने से पहले सुन्दरता ने जगम किया, धीरे जैसे कि सत्य तो उच्चारण होने से पूब भी माय ही था ।

“जीवन हमारी धासोणियों में पाता है धीरे हमारी जिना में धरने देगता है । तब भी जबकि हम जणजित एवं विनीत होते हैं जीवन धरनिहामन पर बैठता है एवं बनवान बनता है । धीरे जबकि हम मोते हैं तो जीवन (धाने धाने) दिन पर मुन्दरता है धीरे तब धीरे

स्वतन्त्र रहता है जबकि हम (हुसामी की) जंजीरों को बसीटते बैठते हैं।

‘ प्रायः हम जीवन को कठोर नामों से पुकारते हैं किन्तु तभी जबकि हम स्वयं ऋद्रु एवं प्रान्धकारमय होते हैं। और हम उठे शून्य एवं निरर्थक समझते हैं किन्तु तभी जबकि (हमारी) आत्मा निर्बल स्वामी में गटकती होती है, और (हमारा) हृदय स्वयं की धारयदिक चेतना की मदिरा पिये हुए होता है।

‘जीवन भगाव और जेबा तथा दूरस्थ है और यद्यपि तुम्हारी बिस्तीर्ण कृष्टि भी उसके पैरों तक नहीं पहुँच पाती फिर भी वह (तुम्हारे) करीब है। और यद्यपि तुम्हारे बसाव की बसाव ही उसके हृदय तक पहुँचती है तुम्हारी परछाई की परछाई ही उसके बहरे को पार करती है (किन्तु) तुम्हारी हलकी-से-हलकी पुकार की प्रतिध्वनि उसके ब्रह्म-स्मन पर एक छटना एवं एक धार्य जलु बन जाती है।

और जिन्ययी धावरण से रुकी हुई तथा छिपी हुई है जैसे कि तुम्हारी अनन्त आत्मा (तुमसे) छिपी हुई है और धावरण के पीछे है। और फिर भी जब जिन्यगी बोलती है तो समस्त वाक् सन्ध बन जाती है और जब वह फिर बोलती है तो तुम्हारे घोठों की मुस्कान एवं धाँसों के धाँसु भी सध्यों में परिवर्तित हो जाते हैं। जब वह गाती है तो बहरे सुनते हैं तथा मन्त्र मुन्ध हो जाते हैं और जब वह बसती हुई जाती है तो अपने उसे देखते हैं और बिस्मित हो उठते हैं और बिस्मय तथा आश्चर्य से उसका पीछा करते हैं।

और (यब) वह चुप होवया और एक अनन्त सामोसी ने (सभी) मोनों को मेर मित्रा और उस सामोसी में वा एक प्रजापत पाग। उन (मोनों) के एकाकीपन एवं निरन्तर पीड़ा को सामबना प्राप्त हो गई थी।

घौर उमने उमी राउ उग्हें (बही) छाह दिया घौर उम बपीबे के गम्मे पर बस दहा जोकि उमके माता-पिता वा या जहाँ के घनल निग में नीन से—बे घौर उनके पूर्वज ।

घौर बहा एमे भी (घनेक) से जो उमके पीउ-पीउ जाना बाहते से यह मोफकर कि (बह एक घनेके बाद) पर लोटा है घौर बह घनेला है क्योंकि उमका एक भी मन्दगधी जाबिन नहीं वा जोकि उनके नियनानुकार प्रीनिमोत्रों से उमका स्थापन करता ।

किन्तु उमके जगत्र के प्रधान माधिक ने उग्हें मन्मया घौर बहा "उग्हें घनेक रास्ते पर (घनेमे) जाने से क्योंकि उनकी मोटी ली एकाधीरन की रोटी है घौर उनके प्याले में पादमारों की मन्त्रि है जिसे वे घनेमे ही पियेवे ।"

घौर उमके मादिकों ने घने (बउते हुए) बहम रोह मिए, क्योंकि वे जानते थे कि उनके प्रपन म जा कुछ उमसे बहा है मप है । घौर उन मबने भी जोकि मन्त्र की दीवार पर दबट्टा हुए से घने लुगा के वेंरों को घेर मिया ।

केबन बरीया ही उमके एकाधीरन घौर उसकी पादमारों को मोबत्रा हुई कुछ दूर हटकर उमके पीछ बन ही । बह बोनी कुछ नहीं केबन (कुछ दूर नमहर) बहा घौर घने स्वयं के घर को बनी गई घौर (घनेमे) बदीबे में बाशाब के बध के नीचे कू-कूटकर मो पड़ी किन्तु बह नहीं जानती थी कि बह किमलिए रोई ।

स्वतन्त्र रहता है जबकि हम (हुतामी की) जंजीरों को बसीटते चलते हैं।

प्रायः हम जीवन को कठोर नामों से पुकारते हैं किन्तु तभी जबकि हम स्वयं कट्टु एवं प्रथकारमय होते हैं। धीरे हम उसे सूक्ष्म एवं निरबंक समझते हैं, किन्तु तभी जबकि (हमारी) धारणा निर्बल स्वार्थों में भटकती होती है धीरे (हमारा) हृदय स्वयं की घत्यधिक चेतना की मदिरा पिये हुए होता है।

जीवन प्रभाव धीरे ठंडा तथा दूरस्थ है धीरे यद्यपि तुम्हारी विस्तीर्ण दृष्टि भी उसके पैरों तक नहीं पहुँच पाती फिर भी वह (तुम्हारे) करीब है। धीरे यद्यपि तुम्हारे स्वास की रसास ही उसके हृदय तक पहुँचती है, तुम्हारी परछाई की परछाई ही उसके बहरे को पार करती है (किन्तु) तुम्हारी हसकी-से-हसकी पुकार की प्रतिध्वनि उसके बसःस्थल पर एक झरना एवं एक दरब श्रुत बन जाती है।

धीरे बिम्बनी भावरण से डकी हुई तथा छिपी हुई है, जैसे कि तुम्हारी भग्नत धारणा (तुमसे) छिपी हुई है धीरे भावरण के पीछे है। धीरे फिर भी जब बिम्बनी बोलती है तो समस्त वायु घट्ट बन जाती है धीरे जब वह फिर बोलती है तो तुम्हारे धोळों की मुस्कान एवं धालों के धाँसु भी धालों में परिवर्तित हो जाते हैं। जब वह गाती है तो बहरे मुगठे हैं तथा मन्म मुग्ध हो जाते हैं धीरे जब वह चलती हुई जाती है तो धग्ने उसे देखते हैं धीरे विस्मित हो उठते हैं धीरे विस्मय तथा धाश्चर्य से उसका पीछा करते हैं।

धीरे (जब) वह चुप हो गया धीरे एक भग्नत जामोड़ी ने (सभी) लोगों को बेर लिया धीरे उस जामोड़ी में, या एक धारात धान। उन (लोगों) के एकाकीपन एवं निरातर पीड़ा को सारबना प्राप्त हो गई थी।

घोर उनमें उम्मीं सगु उम्हें (बही) छोड़ दिया घोर उन बगीचे के रास्ते पर चम पड़ा जाकि उसके माता-पिता का पा जहाँ के बनल निद्रा में सीम पे—वे घोर उनके पूजक ।

घोर वहाँ एमे भी (घनेक) पे जो उनके पीछ-पीछ जाका बाहूने पे यह सोचकर कि (बहु एक घरमे के बाह) पर लीग है घोर बहु पकेना है क्योंकि उसका एक भी नग्दगी ओबिन नहीं था जोकि उनके नियमानुसार प्रीनिमोर्डी में उमका स्थापन करता ।

किन्तु उनका जगत्र के प्रदान नादिक ने उम्हें समझया घोर वहा उम्हें घने रास्ते पर (घनेमे) जाने दो क्योंकि उनकी रोटी तो एकाकीजन की रोटी है घोर उनके प्पाने में यादघारों की मदिरा है जिसे वे घनेमे ही पियेंगे ।”

घोर उनके नादिकों ने घान (बहुन हा) बहुत रोह मिण, क्योंकि वे जानते थे कि उनका प्रपान ने या कुछ उनसे कहा है सप है । घोर उन सबसे भी जोकि मन की दीवार पर दबटा हुए पे घानी दण्डा के दीरों की फेर लिया ।

बेचन कटीमा ही उनके एकाकीजन घोर उनकी यादघारों को लोचनी हुई कुछ दूर दूरकर उनके पीछे चल दी । बहु बोनी कुछ नहीं बेचन (कुछ दूर चलकर) मरी घोर घने स्वयं के घर को चली गई घोर (घनन) बदीचे में आशय के बरा के नीचे कूट-पूटकर तो पड़ी किन्तु वह नहीं जानती थी कि वह किनलिए रोई ।

घौर धनमुस्तफा घागे बड़ा घौर उसने अपने माता-पिता का बबीचा खोज लिया। वह बबीचे के घरघर जमा गया घौर (घरघर से) दरवाजा बन्द कर लिया जिससे कि उसके पीछे कोई धारमी (भीतर) न जा सके।

घौर जामीस दिन तथा जामीस रात वह उस मकान घौर बबीचे में घकेला पड़ा रहा। घौर कोई भी लो (वहाँ) नहीं घाया—दरवाजे के कड़ीब भी नहीं क्योंकि वह बन्द था घौर सब लोग जानते थे कि घसे घकेला ही रहना था।

घौर जामीस दिन तथा जामीस रात बीच जाने के बाद धनमुस्तफा ने दरवाजा खोल दिया जिससे कि लोग घरघर जा सकें।

घौर नी धारमी उसके साथ रहने के लिए घरघर घाये—तीन नाधिक उसके स्वयं के जहाज से तीन थे जिन्होंने मन्दिर में सेबाएँ की थी, तीन थे जोकि उसके बचपन के खेल के साथी थे घौर वे उसके शिष्य थे।

घौर एक प्रातः उसके शिष्य उसके चारों घौर बैठ गए। उसकी घीखों में घनस्त डूरी एवं स्मृतियाँ बसी हुई थीं। घौर वह शिष्य जिसका नाम हाफिज था उससे बोला “घभू इफ्तीख नवर के दिपय में कुछ बतायें घौर उन देखों के दिपय में भी वहाँ कि घापने ये बारह वर्ष बिठाये हैं।

घोर धनमुस्तफ़ल सामोश ही बना रहा, उसने पहाड़ियों की घोर देखा घोर अपनी पाँवों धनस्त धूम्य में मड़ा ही। घोर उसकी सामोशी में एक संघर्ष था।

तब उसने कहा, 'मेरे मित्रो घोर मेरे हमराहियो ! यह देश बय नीय है जोकि (धंघ) बिपवासों स पूर्ण है किन्तु धर्म से धूम्य।

"यह देश भी दयनीय है जोकि उस कपड़े को पहनता है जिसे यह स्वयं नहीं बुनता घोर यह मरिच पीता है जो उसके स्वयं के मरिच के कोसुधुपा से नहीं बहती।

'घोर यह देश भी दयनीय है जोकि निर्बन्धी को शूरवीर मानता है घोर बमकठे हुए बिजवी को उबार समझता है।

'घोर यह देश भी दयनीय है जोकि अपने में एक इच्छा का तिर स्कार करता है घोर जागृत धनस्था में उसीके बघ में सीन रहता है।

'घोर यह देश भी दयनीय है जोकि मृत्यु के अनुष्ठ में बमते समय के प्रतिरिक्त कभी भी अपनी धाबाब नहीं उठाता अपने बंधहरों के प्रतिरिक्त कहीं अपनी बड़ाई नहीं हाँकता घोर कभी बयाबत नहीं करता सिवाय तब के जबकि उसकी मरदन तमवार घोर पत्बर के बीच रख ही गई हो।

'घोर यह देश भी दयनीय है जिसका राजनीतिक एक नीमकी है जिसका धार्मिक एक बाबीपर है घोर जिसकी कसा वैदन्त मगाना घोर बहुकपिजा बनाना है।

घोर यह देश भी दयनीय है जो अपने नये राजा का धूम-धाम से स्वागत करता है घोर झी-झी करके (उसे) बिदा करता है, केवल इस लिए कि दूसरे (राजा) का फिर धूम-धाम से स्वागत करे।

घोर यह देश भी दयनीय है जिसके महात्मा बपों के साथ घुने हो गए है घोर जिसके शूरवीर धमी पालता झूठ रहे है।

घोर दयनीय है यह देश जोकि धनेक टुकड़ों में बँटा हुआ है घोर प्रत्येक टुकड़ा अपने को एक देश समझता है।"

धीर एक दोसा 'हमें के बातें बताने जोकि घनी भी घापके हृदय में मटक रही है ।

धीर उसने उस (किव्य) की धीर देखा । उसकी भावाब्ध में तारों के गीत बीषा स्वर व्याप्त था । उसने कहा "अपने जागृत स्वप्न में जबकि तुम क्षामोष होते हो धीर अपनी अन्तरात्मा (श्री भावाब्ध) को सुनते हो तुम्हारे विचार हिय के टुकड़ों की भाँति बिरते धीर फड़फड़ाते हैं धीर तुम्हारे समस्त प्रश्नों की भावाब्धों को बबेठ क्षामोषी से डँक देते हैं ।

'धीर जागृत सपने क्या है सिवाय मेघ के जोकि तुम्हारे हृदय के आकाश-बूझ पर संकुचित होता है एवं बिलता है । तुम्हारे विचार क्या है सिवाय पक्षियों के जिन्हें कि तुम्हारे हृदय की घाँधी पहाड़ियों धीर उसके मैदानों पर बिलोर देती है ।

धीर बीषे कि तुम घाम्ति की प्रतीक्षा तब तक करते हो जब तक कि तुम्हारे अन्तर का निराकार आकार न ग्रहण कर ले, इसी प्रकार मेघ इकट्ठा होता है धीर (अपनी शक्ति को) संभय करता है जब तक कि ईश्वरीय संभलिवाँ उसके नगरे सूर्य धीर अग्रमा एवं विचारे बनने की पुरातन इच्छा को पूर्ण न कर दें ।

तब मारकिस वह जोकि अन्ध-सन्धेही का दोसा 'किन्तु बसन्त



धायेगा और हमारे सपनों का सम्पूर्ण हिम पिघल जायगा। हमारे बिचार भी पिघल जायेंगे और कुछ भी ठा नहीं बचेगा।”

और अक्षयमुस्तफ़ ने यह कहकर उत्तर दिया “जब अक्षय धायी प्रेवसी का हृदय सोनी घाटिकाओं तथा घंगूर के बपीरों में धायेगा तो वास्तव में ही बर्फ पिघल जायगा और नहरना बनकर घाटियों में नदी को डू डूटा दीड़ेगा और महाबहार तथा नारेल के बुझों के लिए साकी का काम करेगा।

“इसी प्रकार तुम्हारे हृदय का बर्फ भी पिघल जायगा जबकि तुम्हारा अक्षय धायेगा और इस प्रकार तुम्हारे रहस्य नरने बनकर वह अक्षय घाटियों में जीवन की नदी में जा मिलने के लिए और उन्हें अक्षय मात्र तक ले जाने के लिए।

जब अक्षय धायेगा तो सभी वस्तुएँ पिघल जायेंगी और नील बन जायेंगी यहाँ तक कि सितारे भी (और) बर्फ की बड़ी-बड़ी बट्टानें भी जोकि बिस्तीरु मीदानों में बीरे-बीरे उतरती हैं सभी गाते हुए नहरनों में मग्न जायेंगी। जब उस (ईश्वर) के चेहरे का सूर्य फैले हुए अक्षय के ऊपर निकलेगा तो कौनसी एक-क्य सभी हुई वस्तुएँ तरल संगीत में परिवर्तित न हो जायेंगी और तुममें से कौन महाबहार तथा नारेल के लिए साकी न बनेगा ?”

‘वह तो कस की ही बात है कि तुम बहते सागर के साथ अक्षय कर रहे व और तुम्हारा कोई किनारा नहीं था तुम अक्षय-बिहीन थे। अब धायु ने जोकि तुम्हारे जीवन का बचाव है तुम्हें युवा धपने चेहरे पर प्रकाश का एक आभरण बनाया उसके हाथों ने तुम्हें इच्छा किया तुम्हें आकार दिया और एक ऊँचा अक्षय रखकर तुमने ऊँचाई प्राप्त की। किन्तु सागर तुम्हारे पीछे-पीछ चला और उसका पीछ सभी तुम्हारे साथ है। और यद्यपि तुम धपने अक्षयता को भूल गए हो (किन्तु) वह तो धपने अक्षय को स्थापित रखेगा और हमेशा तुम्हें धपने पास बुलावेगा।

“पहाड़ों और रेगिस्तानों में घटकते हुए भी तुम उसके धीतब हृदय की बहुराई को स्मरण करोगे । और यद्यपि प्रायः तुम्हें यह ज्ञान नहीं होगा कि किसके लिए तुम उगमत्त हो किन्तु वास्तव में यह उसकी जय-जय घोषित ही होगी ।

“इसके प्रतिरिक्त और हो ही क्या सकता है ? बपीचों में और कृष्णों में तब जबकि पहाड़ों पर पतियों में वर्षा नाचती है, जबकि बर्फें गिरती हैं—एक भाव्यधीमता एवं एक प्रापमन के स्वरूप घाटियों में जब कि तुम अपने पशुओं के भुष्णों को नवी की ओर ले जाते हो तुम्हारे खेतों में जहाँ कि छोटे चाँदी जैसे झरनों की घाँति (प्रकृति की) हरी पोशाक में लो जाते हैं तुम्हारे बपीचों में जहाँ कि छबेरे की मोस घाकाय को प्रतिबिम्बित करती है तुम्हारे बरबाहों में जबकि संघ्ना की बून तुम्हारे रास्ते पर हलका परबा बिछा देती है इन सभी में सायर तुम्हारे साथ है तुम्हारी बँस-गरम्परा का एक घासी और तुम्हारे प्रेम का एक घाँकरी ।

“यह तुम्हारे में एक हिम का टुकड़ा ही तो है जो नीचे सायर को धीक रहा है ।”

घौर एक (दिन) सवेरे, जबकि वे बपीचे में बूम रहे वे द्वार पर एक स्त्री दिखाई पड़ी। वह करीमा थी वह जिसे कि धम्ममुत्तपप्प ने बचपन में अपनी बहुत ही मर्ति प्यार किया था। घौर वह बाहर नहीं थी सामोरा घौर अपने हाथों से दरवाजा भी नहीं खटखटा रही थी, किन्तु केवल इच्छुट एवं दुःखमय दृष्टि से बपीचे को ठाक रही थी।

घौर धम्ममुत्तपप्प ने उसके पलकों पर उमड़ती धाकासा देख ली। तब करमों से वह दीवार के पास आया घौर द्वार उसके लिए खोल दिया। वह धम्म पा गई घौर (इस प्रकार) उसका स्वागत हुआ।

घौर तब वह बोली "तुमने क्यों हम सब सोपों का बहिष्कार किया है जिससे कि हम तुम्हारे बेहरे के प्रकाश में नहीं रह सकते ? क्योंकि देखो इन पलक क्यों तक हमने तुम्हें प्यार किया है घौर तुम्हारे सम्मुख लौटने की हमने प्राकृतिक प्रतीक्षा की है। (सब) सोप तुम्हें पुकार रहे हैं घौर तुम्हारे नाप बातें करना चाहते हैं। घौर उनकी दूत बनकर तुम्हारे पास मैं प्रार्थना लेकर आई हूँ कि तुम सोपों को भजना दान दो अपने ज्ञान की बातें उन्हें बताओ घौर दूटे हुए हृदयों को सान्त्वना दो तथा हमारी बुद्धिहीनता के लिए हमें सिखा दो।"

“पहाड़ों और रेगिस्तानों में घटकटे हुए भी तुम उसके शीतल हृदय की यहुराई को स्मरण करोगे । और यद्यपि प्रायः तुम्हें यह ज्ञान नहीं होता कि किसके लिए तुम उगमत्त हो किन्तु वास्तव में वह उसकी जय-वन्द्य ज्ञानि ही होती ।

“इसके प्रतिरिक्त और ही क्या सकता है ? बगीचों में और झुन्डों में ठक जबकि पहाड़ों पर पत्तियों में वर्षा नाचती है, जबकि बर्फ गिरता है—एक भाग्यशीलता एवं एक धापयन के स्वरूप जाटियों में जब कि तुम अपने पक्षुओं के झुन्डों को नदी की ओर ले जाते हो तुम्हारे खेतों में जहाँ कि सोते चाँदी जैसे झरनों की जाँति (प्रकृति की) इरी पोशाक में खो जाते हैं तुम्हारे बगीचों में जहाँ कि सवेरे की धोल झाकास को प्रतिबिम्बित करती है तुम्हारे जरागाहों में जबकि संख्या की बून तुम्हारे रास्ते पर हलका परदा बिछा देती है इन सभी में सापर तुम्हारे साथ है, तुम्हारी बंध-परम्परा का एक छासी और तुम्हारे प्रेम का एक धधिकाटी ।

‘यह तुम्हारे में एक हिम का टुकड़ा ही तो है जो नीचे सापर को ढीक रहा है ।’

घौर एक (दिन) सुबेरे, जबकि वे बगीचे में घूम रहे थे द्वार पर एक स्त्री दिखाई पड़ी । वह करीमा थी वह जिसे कि धनमुस्तफ़ ने बचपन में अपनी बहन की भाँति प्यार किया था । घौर वह बाहर लड़ी भी सामोस घौर अपने हाथों से दरवाजा भी नहीं लटखटा रही थी किन्तु केवल दन्तुक एवं दुःखमय दृष्टि से बगीचे को ताक रही थी ।

घौर धनमुस्तफ़ ने उसके पलकों पर उमड़ती धाकाँया देख ली । ठेक करमी से वह बीबार के पास धामा घौर द्वार उसके लिए खोल दिया । वह मन्दर भा गई घौर (इस प्रकार) उसका स्वागत हुआ ।

घौर तब वह बोली "तुमने क्यों हम सब लोगों का बहिष्कार किया है जिससे कि हम तुम्हारे बिहारे के प्रकाश में नहीं रह सकते ? क्योंकि देखो इन धनेक क्यों तक हमने तुम्हें प्यार किया है घौर तुम्हारे सकुण्ठ लौटने की हमने प्रार्थना प्रतीक्षा की है । (सब) लोग तुम्हें पुकार रहे हैं घौर तुम्हारे साथ बाँटें करना चाहते हैं । घौर उनकी दूत बनकर तुम्हारे पास मैं प्रार्थना लेकर आई हूँ कि तुम लोगों को अपना दर्शन दो अपने ज्ञान की बाँटें उन्हें बताओ घौर दूटे हुए हृदयों को सान्त्वना दो तथा हमारी बुद्धिहीनता के लिए उन्हें शिक्षा दो ।"

धीर करीमा की धीर देखते हुए उसने कहा 'मुझे विद्वान् न कहो जबकि तुम अमस्त मनुष्यों को जानी नहीं समझते । मैं तो एक युवा फल ही तो हूँ जोकि अभी भी टहलियों से सटक रहा है धीर अभी कल ही की तो बात है कि मैं केवल एक पुष्प ही था ।

'धीर अपने में किसीको भी बुद्धिहीन न कहो, क्योंकि सत्य तो यह है कि हम न तो विद्वान् ही हैं धीर न भ्रमान् । हम तो जीवन के बृक्ष पर हरी पतियाँ हैं धीर जीवन स्वयं ज्ञान के परे है तथा अक्षय ही अज्ञानता से भी दूर है ।

'धीर क्या वास्तव में ही मैं तुमसे अलग हूँ ? क्या तुम नहीं जानते कि दूरी कुछ भी नहीं है सिवाय उसके जिस पर कल्पना-शक्ति द्वारा आत्मा पुन नहीं बाँध पाती । धीर जब आत्मा उस दूरी पर पुन बाँध लेती है तो वह (दूरी) आत्मा में एक यौत बनकर समा जाती है ।

'वह दूरी जोकि तुम्हारे धीर तुम्हारे पड़ोसी में अन्तर्ह के कारण (अप्यन हरी) है वास्तव में उन दूरी से कहीं अधिक है जोकि तुम्हारे धीर साथ देखों तथा साथ समुद्र पार बसने वाले तुम्हारे प्रेमी के बीच में है ।

'अर्थात् स्मृति के लिए दूरी कुछ नहीं है धीर विस्मृति में ही एक ऐसी खाई है जिसे न तो तुम्हारी बाणी धीर न ही तुम्हारे नेत्र बाँध सकते हैं ।

'समुद्र के किनारों तथा ऊँची-से-ऊँची पहाड़ियों की चोटियों के बीच एक ऐसा गुप्त मन्त्र है जिसे तुम्हें अक्षय तय करना पड़ेगा इससे पहले कि तुम पृथ्वी के पुत्रों के साथ एक हो सको ।

'धीर तुम्हारे ज्ञान तथा तुम्हारी समझ के बीच एक ऐसा पन्ना है जिसे तुम्हें अक्षय ही खोज निकालना होगा इससे पहले कि तुम मनुष्य के साथ एक हो सको धीर इस प्रकार स्वयं में समा सको ।

'तुम्हारे घावों हाथ जोकि देता है धीर तुम्हारे घावों हाथ जो कि लेता है, (दोनों) के बीच एक अमन्त्र दूरी है । केवल दोनों का

प्रयोग करके, देकर घीर लेकर, ही तुम इन बीनों के बीच की दूरी समाप्त कर सकते हो क्योंकि इसी ज्ञान द्वारा कि (धर्म में) न तुम्हें कुछ देना है घीर न ही तुम्हें कुछ सेना है तुम दूरी को तय कर सकते हो ।

“वास्तव में सबसे विस्तृत दूरी तो यह है जोकि तुम्हारे निरा धर्म एवं जागरण के बीच है घीर उसके बीच है जोकि केवल एक कर्म है घीर वह जो एक प्राणसा है ।

“घीर एक घीर पथ है जिसे पार करने की तुम्हें अत्यन्त आवश्यकता है इससे पहले कि तुम जीवन में समा सको । किन्तु उस के विषय में अभी मे कुछ नहीं कहूँगा यह देखते हुए कि प्रमाण करते करते तुम अभी ही अब थक हो ।”

धीर करीमा की धीर देखते हुए उसने कहा 'मुझ विद्वान् न कहो जबकि तुम समस्त मनुष्यों को ज्ञानी नहीं समझते । मैं तो एक पुत्रा फल ही तो हूँ, जोकि अपनी भी टहनियों से सज्जक रहा है धीर अभी कल ही की तो बात है कि मैं केवल एक पुष्य ही था ।

‘धीर अपने मैं किसीको भी बुद्धिहीन न कहो क्योंकि सत्य तो यह है कि हम न तो विद्वान् ही हैं धीर न अज्ञान । हम तो जीवन के बुद्ध पर ही पतियाँ हैं धीर जीवन स्वयं ज्ञान के परे है तथा अचरम ही अज्ञानता से भी दूर है ।

‘धीर क्या वास्तव में ही मैं तुमसे अलग हूँ ? क्या तुम नहीं जानते कि पूरी कुछ भी नहीं है सिवाय उसके बिना पर अल्पना-व्यक्ति द्वारा आत्मा पुन नहीं बाँध पाती । धीर जब आत्मा उस दूरी पर पुन बाँध लेती है तो वह (दूरी) आत्मा में एक नीत बनकर समा जाती है ।

‘वह दूरी जोकि तुम्हारे धीर तुम्हारे पड़ोसी में अलह के कारण (अल्पना हुई) है वास्तव में उस दूरी से कही अविच्छिन्न है जोकि तुम्हारे धीर सात सैरों तथा सात समुद्र पार बसने वाले तुम्हारे प्रेमी के बीच में है ।

‘क्योंकि स्मृति के लिए दूरी कुछ नहीं है धीर विस्मृति में ही एक ऐसी आई है जिसे न तो तुम्हारी वासी धीर न ही तुम्हारे बीच बाँध सकते हैं ।

‘समुद्र के किनारों तथा ऊँची-से-ऊँची पहाड़ियों की चोटियों के बीच एक ऐसा गुप्त मय है जिसे तुम्हें अचरम तय करना पड़ेगा इससे पहले कि तुम पृथ्वी के पुत्रों के साथ एक ही सको ।

‘धीर तुम्हारे ज्ञान तथा तुम्हारी समझ के बीच एक ऐसा पथ है जिसे तुम्हें अचरम ही खोज निकालना होगा इससे पहले कि तुम मनुष्य के साथ एक ही सको धीर इस प्रकार स्वयं में समा लको ।

‘तुम्हारे बायें हाथ जोकि श्रेष्ठ है, धीर तुम्हारे बायें हाथ जो कि श्रेष्ठ है (शीतों) के बीच एक अचरम दूरी है । केवल शीतों का

प्रयोग करके, देखकर और सेहत, हो तुम इन चीजों के बीच की दूरी समाप्त कर सकते हो क्योंकि इसी ज्ञान द्वारा कि (८८ में) तुम्हें कुछ देना है और न ही तुम्हें कुछ लेना है, यह दृष्टि को पराप्त कर सकते हैं।

'वास्तव में सबसे बिसर्गीय दृष्टि तो यह है जहाँ तुम्हें ईश्वर, बुद्ध एवं आपस के बीच है और उनके बीच है जहाँ ब्रह्मण्य कर्म है और वह जो एक प्राणी है।

'और एक और पक्ष है जिस पर करने की तुम्हें जानना पड़ता है इससे पहले कि तुम जीवन में क्या करते। 'दृष्टि ज्ञान के विषय में अभी मैं कुछ नहीं कहूँगा पर देखते हुए कि क्या करते करते तुम अभी हा ऊपर चले जा।'

और जब वह करीमा के साथ चल पड़ा वह धीर (उसके) नी (शिष्य) यहाँ तक कि (वे) बाजार में भी पहुँच गए । उसने सोचों से बातें भी अपने मित्रों एवं पड़ोसियों (से भी) और उनके बहनों तथा नयनों में खुशी जमक रही थी ।

और उसने कहा 'तुम अपनी जिज्ञा में बड़ते हो और अपना सच्चा जीवन सपनों में बिताते हो क्योंकि तुम्हारा समस्त दिन बम्बदाब होने में बीत जाता है उसके लिए जोकि तुमने रात्रि की क्षामोशी में पाया है ।

'माय' तुम रात्रि को विधाम करने का समय बताते हो किन्तु सत्य यह है कि रात्रि तो पाने और खोजने का समय है ।

'दिन तुम्हें ज्ञान की शक्ति प्रदान करता है और तुम्हारी उँगलियों को लेने की कला में बल बनाता है, किन्तु यह रात्रि ही है जोकि तुम्हें जीवन के खजाने के मकान तक ले जाती है ।

'सूर्य तो जब सब वस्तुओं को दिखा देता है जोकि प्रकाश के लिए अपनी आवश्यकताएँ बढ़ाती रहती हैं । किन्तु यह रात्रि ही है जो कि उन्हें सितारों तक ऊँचा उठती है ।

'मास्तर में यह रात्रि की क्षामोशी है जोकि जंगल में पेड़ों पर तथा बगीचों में फूलों पर बिबाह का आबरुस बुनती है और महान्

कहेगा (या वह) बौकि तुम्हारे घर के पास से गुजरे और तुम्हारे दरवाजे पर दस्तक भी न दे ?

‘और कौन तुम्हें बहरा तथा घलानी कहेगा जबकि वह तुमसे अनजान भाषा में बात करे, जिसे तुम ठनिक भी नहीं समझते ?

‘क्या वह वह नहीं है जिसे तक पहुँचने का तुमने कभी प्रयास नहीं किया जिसके हृदय में प्रवेश करने की तुम्हारी कभी इच्छा नहीं हुई, जिसे कि तुम कुम्भ कहते हो ?

‘यदि कुम्भता कुछ है तो वास्तव में वह हमारी घाँटों पर एक घाबरण है एवं हमारे कानों में घरा हुआ मोम ।

‘किसीको भी कुम्भ न कहो मेरे मित्र सिवाय एक घात्मा के मय जो उसकी घपनी स्पृतियों को सम्मुख ।

घौर एक दिन जबकि वे दबेठ बिगार के बुरी के लम्बे साथे में बैठे हुए थे (उनमें से) एक बोला "प्रभु मैं समय से बरता हूँ। वह हम पर मे घुबरता है घौर हमसे हमारा यौवन मूट ल जाता है घौर बदले में हमें देता क्या है?"

घौर उसने उत्तर दिया घौर कहा "घमी एक मुट्ठी भर मिट्टी तुम (हाथ में) लो। क्या तुम्हें उसमें कोई बीज प्रबवा कोई कीटाणु दिखाई पड़ता है? यदि तुम्हारे हाथ बिस्तीर्ण एवं बिरस्मायी हैं तो बीज एवं बन सकता है घौर कीटाणु प्रप्तरासों का एक मुण्ड। घौर यह न मूस कि बर्न जिन्होंने बीज को बन तथा कीटाणु को प्रप्तरा बनाया है 'प्रब' (समय) से सम्बन्धित हैं समस्त बर्न इस 'प्रब' से ही।

बर्न की ऋणुएँ तुम्हारे परिवर्तित होते बिचारों के प्रतिरिक्त क्या है? बहार तुम्हारे हृदय में एक जापरण है घौर शीघ्र तुम्हारी की परिपूर्णता की स्वीकृति ही तो है। क्या घरर तुम्हारे में उते कि घमी भी बच्चा है सोरिया सुनाने वाला पुरातन नहीं है? मैं तुमसे पूछता हूँ हेमन्त एक मित्रा के जोकि दूसरी ऋणुओं के से (कूतकर) मोटी हो गई है प्रतिरिक्त घौर क्या है?"

घौर तब जिज्ञासु शिष्य मानस ने प्रपने चारों घौर बूटि घौर देखा कि घमीर क बूज पर घूमों से लेकर नीचे तक एक बेल

कहोया (स्वा वह) ओकि तुम्हारे घर के पास से गुजरे और तुम्हारे दरवाजे पर दस्तक भी न दे ?

‘घर कीज तुम्हें बहुरा तथा अज्ञानी कहेगा जबकि वह तुमसे अनजान भाषा में बात करे जिसे तुम तनिक भी नहीं समझते ?

‘ज्या यह वह नहीं है जिस तक पहुँचने का तुमने कभी प्रयास नहीं किया जिसके हृदय में प्रवेश करने की तुम्हारी कभी इच्छा नहीं हुई, जिसे कि तुम क्रूर कहते हो ?

‘यदि क्रूरता कुछ है तो वास्तव में वह हमारी छाँटों पर एक धावरण है एवं हमारे कानों में घरा हुआ मोम ।

“किस्तीको भी क्रूर न कहो मेरे मित्र सिबाय एक धारणा के भय को उसकी अपनी स्मृतियों को सम्मुख ।”

घौर एक निम जबकि वे स्वैय विचार के बुद्धों के सम्ये माये में बैठ हुए थे (उनमें से) एक बाबा 'अनु' ने समय में बरता है। वह हम पर से प्रकृत है घौर हमसे हमारा यौवन मृत से जाता है, घौर बरते में हर्षे बेता क्या है ?"

घौर उसने उत्तर दिया घौर कहा "घभी एक मुद्रा-भर मिट्टी दुन (हाथ में) लो। क्या तुम्हें उसमें कोई बीज प्रयवा कोई काटागु रिबाई पड़ता है ? यदि तुम्हारे हाथ किम्बोजु एवं विरम्पामी हैं तो बीज एक बन सकता है घौर कीटानु घन्तराघों का एक मुद्र। घौर यह न मुना कि बने किम्होंने बीज को बन तथा कीटानु का पन्तर बनना इन 'घब' (समय) से सम्बन्धित है समस्त बने इस 'घब' में है।

"बरी की अतुएँ तुम्हारे परिबन्धित होते विचारों के परिबन्धित क्या है ? बहार तुम्हारे हृदय में एक आकरत है, घौर ईश्वर तुम्हारे की परिपूर्णता की स्वीकृति ही तो है। क्या घोर तुम्हारे में उठे व कि घभी नी बन्धा है ताईली मुनाम क्या पृथग्भ मृत्ति है ? घौर में तुमसे पूछता हूँ हेमस्त एक निद्रा क, बंकि इतरी अतुएँ व मन्ने से (पूनकर) मायी हो परी है परिबन्धित घोर क्या है ?"

घौर तब त्रिदामु निम मन्त ने घन्त बरते घोर इति ईश्वरें घौर देखा कि घंघोर क बस पर पन्ने में बंघर मं बन्ध त्व बंघर निजें

हुई है। और वह बोला 'पराभितों को देखिए प्रभु ! वे भारी पत्थरों वाले चोर हैं, जोकि सूर्य के निरन्तर कणों से प्रकाश चरा मते हैं और उस रस का जोकि उनकी आत्माओं एवं पत्थरों में बौद्धता है (पी कर) घोष मगाते हैं ।"

और उसने यह कहकर उत्तर दिया 'मेरे मित्र हम सभी पराभयी हैं। हम, जोकि भूमि को देहगत करके बढ़कते हुए जीवन में परिवर्तित करते हैं उनसे ऊपर नहीं हैं जो प्रत्यक्ष मिट्टी से ही जीवन प्राप्त करते हैं यद्यपि मिट्टी को समझते नहीं हैं।

'क्या मैं अपने बच्चे से यह नहूँपी 'मैं तुम्हें प्रकृति को जोकि तेरी बड़ी माँ है बापस बेती हूँ, क्योंकि तू मुझे परेधान करता है (मेरे) हृदय तथा हाथों को ?

'और क्या मायक अपने स्वयं के ज्ञान की निम्ना कर सकता है, यह कहकर, अब अपनी प्रतिध्वनि की गुंथा को बापस लौट आओ जहाँ से तुम धाये थे क्योंकि तुम्हारी आवाज मेरी छाँस चाहती है ?

और क्या एक पड़रिया अपनी बड़ के बच्चे से यह नहूँना 'मेरे पास कोई चरामाह नहीं है जहाँ कि मैं तुम्हें से बाठ इसलिए बट जा और इसके निमित्त बलिदान हो जा ?'

'नहीं मेरे मित्र, इन सब बातों के उत्तर प्रश्न सटने से पहले ही वे बिए जाठ हैं और तुम्हारे सपनों की भाँति जबकि तूम सोए रहते हो पूर्ण हो जाते हैं।

'हम विज्ञान के अनुसार, जोकि पुरातन एवं अमर है, एक-दूसरे के सहारे जीते हैं। इस प्रकार हमें प्रथमय कृपा पर जीवित रहना भी चाहिए। हम अपनी स्वतन्त्रता में एक-दूसरे को सोजते हैं। और (दर्भा) हम रास्ते पर घूमते हैं जबकि हमारे पास कोई धँयीठी नहीं होती जिसके सहारे बैठ सकें।

'मेरे मित्रो तथा मेरे भाइयो जिस्तीरुं पथ तो तुम्हारा हमराही ही है।

“सुनाएँ, जाकि बुझों पर (जीबिउ) छुनी है रात्रि की मीठी
सामोशी में पूष्पी से डूब पाती है, घोर पूष्पी घनने छात्र मननों में
सूर्य के बल-स्थल से (डूब) बूमती है।

“घोर सूर्य ऐसे ही जैसे कि मैं घोर दुःख तथा प्रग्य सब जो यहाँ
है उन रात्रिनुमा के प्रीनिमोत्र में बराबर घाबर क माय बैठता है
त्रिसके डार हुमेगा खुबे छूते हैं घोर त्रिसका इस्तरबान हुमेगा बिछा
छटा है।

“मानस मेरे मित्र जो कुछ भी यहाँ जीबिउ है उस पर जीबिउ
छटा है जोकि यहाँ है घोर सब-कुछ यहाँ बिस्वास पर जीबिउ है
(तथा) घनल एव सर्वोच्च की कृपा पर।”



धीरे एक दिन जबकि आकाश सूर्योदय के कारण अभी पीला ही था उन सबने इकट्ठे बनीबे में प्रवेश किया और पूर्व की ओर देखने लगे तथा जपते हुए सूर्य के सम्मुख आमोच बढ़े हो गए ।

धीरे कुछ क्षण पश्चात् धनमुस्तफ़्ज़ ने अपने हाथ से (एक ओर) इशारा किया और बोला, 'एक ओस की बूँद में जोर के सूर्य का प्रतिबिम्ब सूर्य से कम नहीं है । तुम्हारी आत्मा में जीवन का प्रतिबिम्ब जीवन से कम नहीं है । ओस की बूँद प्रकाश को प्रतिबिम्बित करती है क्योंकि वह ओर प्रकाश एक है और तुम जीवन को प्रतिबिम्बित करते हो क्योंकि तुम और जीवन एक हो ।

'जब तुम धन्यकार से बिकरे हुए हो तो कहो, इस धन्यकार का समय अभी तक उत्पन्न ही नहीं हुआ है और यद्यपि मुझे रात्रि की पीड़ा पूर्णतः बिकरे हुए है, फिर भी मुझमें प्रकाश अवश्य जन्मेगा । कुमुदिनी के पुष्प की सन्ध्या में अपने आकार को बोल करती हुई ओस की बूँद तुम्हारे स्वयं के ईश्वर के हृदय में जमा हो जाने से भिन्न नहीं है ।

'यदि एक ओस की बूँद बड़े किन्तु एक सहस्र वर्ष में से भी कैवल ओस की बूँद ही हूँ तो तुम कही और उत्तर दो क्या तू यह नहीं जानती कि तैरे बल में समस्त वर्षों का प्रकाश प्रज्वलित है ।



धीर एक दिन जबकि आकाश सूर्योदय के कारण अभी पीला ही था सब सबने इकट्ठे बगीचे में प्रवेश किया धीर पूर्व की धीर देखने लगे तथा उपते हुए सूर्य के सम्मुख आमोघ बड़े हो गए ।

धीर कुछ क्षण पश्चात् असमुत्पन्न ने अपने हाथ से (एक धीर) हथारा किया धीर बोला "एक घोंस की बूँद में धीर के सूर्य का प्रतिबिम्ब सूर्य से कम नहीं है । तुम्हारी आत्मा में जीवन का प्रतिबिम्ब जीवन से कम नहीं है । घोंस की बूँद प्रकाश को प्रतिबिम्बित करती है क्योंकि वह धीर प्रकाश एक है धीर तुम जीवन को प्रतिबिम्बित करते हो क्योंकि तुम धीर जीवन एक हो ।

'जब तुम धन्वकार से विरे हुए हो तो कहो, 'इस धन्वकार का उदय अभी तक उत्पन्न ही नहीं हुआ है धीर यद्यपि मुझे रात्रि की पीड़ा पुर्युत बेरे हुए है, फिर भी मुझमें प्रकाश अवश्य जन्मेगा । कुमुद्विनी के पुष्प की सन्ध्या में अपने धाकार को घोल करती हुई घोंस की बूँद तुम्हारे स्वयं के ईश्वर के हृदय में जमा हो जाने से निम्न नहीं है ।

'यदि एक घोंस की बूँद नहीं किन्तु एक सहस्र वर्ष में ये भी केवल घोंस की बूँद ही हैं तो तुम कहो धीर उत्तर दो 'क्या तू यह नहीं जानती कि तेरे बदन में समस्त वर्षों का प्रकाश प्रसन्नित है ।



घोर एक मन्त्र्या को एक तीव्र घाँपी ने उस स्थान के राजा किये
घोर घनमुस्तफ़ तब उसके भी पिप्य घण्टर (मकान में) था वह घोर
घाम के चारों ओर बैठ गए । व निरपत्त एवं घाण्ट थे ।

तब पिप्यों ने से एक में कहा 'मैं चक्रेता हूँ प्रभु घोर समय के
पंजे जोर जोर से मेरे मन्त्र-स्वत को पीट रहे हैं ।'

घनमुस्तफ़ उठा घोर उन लोगों के बीच खड़ा हो गया तथा
उसने ऐसी घावाक में कहना धारम्भ किया यानी वह तीव्र घाँपी की
घावाक हो 'अरेमा ! तो उसके लिए क्या ? तुम चक्रेते घाये से घोर
चक्रेते ही तुम कोहरे में समा जाओगे ।

"इसलिए धरना प्याता एकाण्ड में घोर सामोमी के साथ पियो ।
घरर के दिनों ने विभिन्न घोटों को विन्त-विन्त प्याते प्रदान किये हूँ
घोर उबको कड़वी तथा मीठी मरिरा से भरा है । जैसे ही उन्होंने तुम्हारे
प्याते को मी (किन्ही-न-किमी प्रकार की मरिरा से) भरा है ।

"भरने प्याते को चक्रेते पिया मछवि उसमें तुम्हारे स्वयं के रक्त
एवं धाँतुओं का स्वाद है घोर 'प्यास' के उपहार के लिए बीजन की
प्रदंषा करी क्योंकि बिना 'प्यास' के तुम्हारा हृदय एक उबड़े हुए
समुद्र के किनारे के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है, कमीठबिहीन एवं सूखन
रहित ।

‘अपना प्यासा थकेले पियो और उसे खुशी से पियो ।

उसे अपने मस्तक से ऊपर उठाओ और उनके लिए गहरा पिछा जोकि (अपने प्यासे) थकेले पीते हैं ।

“एक बार मैंने मनुष्यों का साथ ग्रहण किया और उनके साथ उनकी प्रीतिभोज की मेज पर बैठा तथा उनके साथ मैंने महरी पी । किन्तु उनकी मदिरा मेरे सिर तक न बढ़ पाई और न ही मेरे बल-स्थान में बही । वह केवल मेरे पैरों पर उतर गई । मेरी बुद्धि सूख गई, मेरे हृदय में ठाला लय बना और वह बन्ध हो गया । केवल मेरे पैर खुलके में उनके साथ थे ।

“और फिर मैंने मनुष्य का साथ कभी ग्रहण नहीं किया और न ही उसकी मेज पर कभी उसकी मदिरा पी ।

‘इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ यद्यपि समय के पंचे तुम्हारी छाती को खोर-खोर से पीट रहे हैं परन्तु इससे क्या ? तुम्हारे लिए (बही) प्रणय है कि तुम अपने दुःख का प्यासा थकेले ही पियो और अपने सुख का प्यासा भी तो तुम थकेले ही पियोने ।”

घौर एक दिन जबकि फिरहीम (नाम का) एक मूनानी (उस) बगीचे में सँभ कर रहा था उसको पैर में (घबानक) एक पत्थर से ठोकर सम मर्द घौर बह ऋजु हो उठा। झूमकर उसने पत्थर को उठा लिया घौर भीमे स्वर में बोला "ओ मेरे रास्ते में मर्त्य वस्तु!" घौर उसने पत्थर को दूर फेंक दिया।

घौर धनेकों में एक एक (सबका) प्रिय धनमुस्तफ़ा ने कहा "तुम (यह) क्यों कहत हो 'ओ मर्त्य वस्तु? तुम इस बगीचे में काफी समय से हो घौर यह भी नहीं जानत कि यहाँ मर्त्य वस्तु कोई नहीं है। सभी वस्तुएँ दिन के ज्ञान एवं रात्रि के बीमब में जीवित हैं घौर जय मपाती हैं। तुम घौर (यह) पत्थर एक हो। केवल हृदय की बड़कनों में धन्तर है। तुम्हारा हृदय याज्ञा धबिक ठेज बड़कता है। है न मेरे मित्र? किन्तु यह (पत्थर भी तो) इतना निरधन नहीं है।

"इसकी लय एक दूसरी सय हो सकती है। किन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि यदि तुम अपनी धान्मा की गहराइयों को बटबटाओ घौर धाकास की ऊँचाई को नापो तो तुम्हें केवल एक ही सपीठ मुनाई पड़ेगा घौर उस सपीठ में पत्थर घौर सितारे (मिलकर) यावेंवे एक-दूसरे के साथ प्रसृत एक होकर।

'यदि मेरे धन तुम्हारी समझ तक नहीं पहुँचते तब प्रतीक्षा करो

जब तक कि दूखरा प्रभाव धाये । यदि तुमने इस पत्थर को स्पर्श
 कृतवन्ता है कि तुम अपने धर्मोपन में इससे टकरा गए थे तब क्या
 एक सिद्धांत को भी जिससे कि तुम्हारे मस्तिष्क की मुठभेड़ हो ?
 कृतवन्त होगे ? किन्तु (मैं जानता हूँ) वह दिन धायेगा जबकि तुम के
 और सिद्धांतों को ऐसे चुनते फिरोगे जैसे कि एक बच्चा कृमुदिनी के
 को चुनता है और तब तुम जानोगे कि इन सब वस्तुओं में से
 एक सुगन्ध है ।”



धीर सप्ताह के प्रथम दिन जबकि मन्वियों के बच्चों की आबाज उनके कानों तक पहुँची एक ने कहा प्रभु हम इतर-उतर ईश्वर के विषय में अपने-क बातें सुनते हैं। प्राय ईश्वर के विषय में क्या कहते हैं धीर वास्तव में ईश्वर है क्या ?”

धीर ने उनके सम्मुख एक मुन्हा वृक्ष की भाँति सड़ा हो गया तूफान एवं धाँधी से निबर धीर उसने यह कहकर उतर दिया 'मेरे साक्षियों एवं प्रियो ! धन सोचो एक ऐसा वृक्ष जोकि तुम्हारे समस्त रक्ष्यों को समाये है एक ऐसा प्रेम जिसने तुम्हारे सम्पूर्ण प्रेम को साँप रखा है, एक ऐसी आत्मा जिसमें तुम्हारी समस्त आत्माओं का वसेरा है एक ऐसी आबाज जिसमें तुम्हारी समस्त आबाजें बसती हैं धीर एक ऐसी आमोशी जोकि तुम्हारी समस्त आमोशियों से सहरी तथा प्रसन्न है। अपनी स्वयं की सम्पूर्णता में ग्रहण करने के लिए एक ऐसी सुन्दरता जोओ जोकि समस्त वस्तुओं की सुन्दरता से अधिक मोहन है, एक ऐसा गीत जोकि समुद्र तथा नम के पीठों से अधिक विस्तीर्य है एक ऐसी मम्यता जोकि एक ऐसे सिंहासन पर विराजती है जिसके सम्मुख मृग-अद्विष्ट बाल-नलन भी एक चरखपीठ है धीर जो एक (ऐसा) राजदण्ड पकड़े हुए है जिसमें टके हुए कृत्तिका-नलन' घोस ? तात सुन्दर वस्तुओं का समूह



की बूँदों की जयमनाहट के प्रतिरिक्त धीरे कुछ भा नहीं जान पड़ते ।

“तुमने धमी तक केवल भोजन और आश्रय तथा एक कपड़ा और एक सक्की की ही चाह की है । अब उसे पाने का प्रयास करो जोकि न तो तुम्हारे तीरों के लिए निघाना है और न ही पत्थरों की एक गुच्छ है जोकि तल्लों द्वारा तुम्हारी रक्षा करेगी ।

“और यदि मेरे शब्द एक पत्थर और पहेली ही हैं तो उसे पाओ उससे कम नहीं (जिससे) कि तुम्हारे हृदय टूट जायें और जिससे कि तुम्हारे प्रबल तुम्हें उस सर्वोच्च ज्ञान एवं प्रेम तक ले जायें जिसे कि मनुष्य परमात्मा कहते हैं ।”

धीरे वह सामोस हो गया वृत्तरे सब भी धीरे से अपने हृदय में ध्याकुल हो उठे । धममुत्पन्न उनके प्यार में इतित हो उठ्य और उसने उन्हें कोमल बृष्णि से निहारा तथा कहा ‘आधो अब हमें पिता ईश्वर के विषय में धीरे अधिक बातें महीं करनी चाहिए । हमें बेबताओं तुम्हारे पड़ोसियों और तुम्हारे भाइयों तथा उन तल्लों के विषय में बातें करनी चाहिए जोकि तुम्हारे बरों और सेतों में झुमते हैं ।

“तुम कल्पना में बाबलों तक पहुँच जाओगे और उनकी ऊँचाई का अनुमान भी तथा सोने और तुम बिस्तीरुण सागर को पार कर लोगे तथा उसकी दूरी भी बता दोगे । किन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि जब तुम पृथ्वी में एक बीज देखते हो तो अधिक ऊँचाई तक पहुँचते हो और जब तुम प्रात की सुन्दरता अपने पड़ोसी से गवाते हो तो अनेक सागर पार करते हो ।

अनेक सजब तुम अनन्त ईश्वर के पीठ गते हो और फिर भी सत्य यह है कि तुम (कोई) जाना नहीं सुन पाते । क्या इसलिए कि तुम पाठी हुई जिवियों को सुन लको और पापियों से जिरती हुई पत्तियों (के पीठ) को भी जबकि वामु बुझण्टी है । और भूजो मत मेरे निज वे (पत्तियाँ) तभी पाठी है जबकि शाखाओं से अलग हो जाती है ।

“फिर मैं तुमसे कहता हूँ कि ईश्वर के विषय में, जोकि तुम्हारा

सब-कुछ है, इतनी स्वतन्त्रतापूर्वक बातें न करो किन्तु धीर कुछ कहो धीर एक-दूसरे को समझो पड़ोसी एक पड़ोसी को एक देवता एक देवता को ।

‘क्योंकि बॉससे में बच्चे को कीमत वाला सिसायेगा यदि मां-बिड़िया बाकाय में उड़ती रहे ? धीर जल में कीमता पुष्प परिपूर्ण हो जायगा जब तक कि मनु-मक्ली द्वारा दूसरे पुष्प से बर्म न प्राप्त कर ले ।

‘जबकि तुम अपनी नहीं आत्मा में जो जाते हो तभी तुम बाकाय को जिसे कि तुम ईश्वर कहते हो पाते हो । यह क्या इसलिए कि (तब) तुम अपनी अलग आत्मा में रास्ते डू डू सकते हो धीर क्या इस लिए कि (तब) तुम कम बेकार रह सको धीर मार्ग डू डू सको ?

मेरे भाविको धीर मेरे मित्रो यह बुद्धिमत्ता है कि हम ईश्वर के विषय में जिसे कि हम समझने में असमर्थ हैं कम बातें करें धीर एक-दूसरे के विषय में अधिक जिनको सम्भवतः हम समझ सकें । फिर भी मैं तुम्हें यह बताना चाहूँगा कि हम ईश्वर की स्वाम की एक सुगन्ध हैं । हम ईश्वर ही हैं पत्ती में पुष्प में धीर प्रायः फल में भी ।”

घीर एक दिन तड़के जबकि सूर्य ऊपर उठ चुका था शिष्यों में से एक चतुर्त्तन में से एक जोकि बचपन में उसके साथ खेलने उसके पास पहुँचा घीर बोला प्रभु, मेरे कपड़े फट चुके हैं घीर मेरे पास बसने नहीं हैं। कृपया मुझे हाट तक जाकर लाने की याज्ञा बीजिए सम्भवतः मैं अपने लिए एक नया बाड़ा ला सकूँ।”

घीर अलमुस्तफ़ ने मुझ मनुष्य की धीर बेछा घीर उसने कहा 'मुझे अपने कपड़े दे दो। इससे ऐसा ही किया घीर वह बिलती हुई रूप में मना लड़ा हो गया।

घीर अलमुस्तफ़ ऐसी याज्ञा में बोला जोकि सड़क पर बीड़ते हुए जवान घोड़े की (टाप की) होती है 'केवल नये ही सूर्य (के प्रकाश) में रहते हैं। केवल निष्कपट ही बामु पर सबापी करते हैं घीर केवल वही जो अपना घरवा एक सहस्र बार पीता है अपने घर को नीटता है।

'देवता अतुर (मनुष्यों) से लंग घा पए हैं। घीर कम ही तो एक देवता ने मुझसे कहा 'हमने उन शीयों के लिए गर्क बनाया है जोकि अमकते (अधिक) हैं। अग्नि के अतिरिक्त घीर नबा है जो एक अमकती हुई अतह को अतुर लके घीर अतरेक वस्तु को पिपलाकर उसे प्राकृतिकता प्रदान कर सके ?

घीर मैंने कहा 'किन्तु गर्क बनाने में तुमने जानब भी तो उत्पन्न

कर दिए हैं जोकि नर्क पर राज्य करते हैं। किन्तु देवता में उतर दिया, 'तहीं नर्क पर जगदा राज्य है जो अग्नि क सम्मुख भी न मुक।

'बुद्धिमान देवता। वह मनुष्य एवं अर्ध-मनुष्य की विधियों से परिचित है। वह उन देवी पुराणों में से एक है जोकि देवदूतों की सहायता के लिए आते हैं जब जबकि वे अतुर मनुष्यों द्वारा आकर्षित कर लिये जाते हैं।

'मरे मित्रा धीर मेरे नाविको केवल गया ही मूर्ख के प्रकाश में रहता है। कबल बिना पतवार क ही विद्याल सागर पार किये जा सकत हैं। केवल वह जोकि रात्रि के साथ अन्धकारमय हो जाता है भोर क साथ जागता है, धीर वह जोकि हिम के साथ जड़ों में सोता है बहार तक पहुँचता है।

'क्योंकि तुम भी तो जड़ों की भाँति ही हा धीर जड़ों की तरह ही सरल हा इमीलिए तो पृथ्वी द्वारा तुम्हें मान प्राप्त हुआ है। धीर तुम सामोष हो फिर भी तुम्हारे पास तुम्हारी भावी साक्षात्कारों में बार बापुओं का संगीत व्याप्त है।

'तुम दुर्बल हा धीर तुम निराकार हो फिर भी तुम विद्याल सिद्ध के बुद्ध का आरम्भ हा धीर आकाश पर बने अर्ध-विचित सरई क बुद्ध का भी।

'मेँ फिर से कहता हूँ तुम कान्ही मिट्टी तथा भूमत आकाश के अन्त में (एक) बड़ हीं तो ही। धीर अनेक बार मैने तुम्हें प्रकाश के साथ मूल्य करने के लिए उठत हुए देखा है किन्तु मैने तुम्हें (बन्धुहीन दसा में) सज्जामुक्त भी देखा है। (पर) समी जड़ें सज्जाहीस होती है। उन्होंने अपने हृदय को इतना गहरा छिना लिया है कि वे यह भी नहीं जानती कि उन्हें अपने हृदय का क्या करना चाहिए।

'किन्तु बसन्त जलु आयेगी धीर बसन्त बसन्त सुन्दरी है, वह पहाड़ियों धीर नैदानों को उपजायेगी।'

धीर एक दिन उसके जबकि सूर्य ऊपर उठ चुका था शिप्यों में से एक जग तीन में से एक जोकि बचपन में उसके साथ खेले थे उसके पास पहुँचा धीर बोला, प्रभु मेरे कपड़े फट चुके हैं धीर मेरे पास दूसरे नहीं हैं। कृपया मुझे हाट तक जाकर सामे की माछा बीजिए सम्भवत मैं धपने लिए एक नया जोड़ा ला सकूँ।”

धीर धनमुस्तप्य ने युवा मनुष्य की धोर देखा धीर उसने कहा ‘मुझे धपने कपड़े दे दो। उसने ऐसा ही किया धीर वह बिलती हुई रूप में गंगा लड़ा हो गया।

धीर धनमुस्तप्य ऐसी मावाय में बोला जोकि सड़क पर बीकते हुए जवान जोड़े की (टाप की) होती है ‘केवल नये ही सूर्य (के प्रकाश) में रहते हैं। केवल निष्कपट ही जामु पर सवाटी करते हैं धीर केवल वही जो धपना पस्ता एक सड़क धार लोटा है धपने धर को लौटा है।

देवता बतुर (मनुष्यों) से तम सा गए हैं। धीर कम ही ता एक देवता ने मुझसे कहा ‘हमने जग लोनों के लिए मर्क बनाया है जोकि धमकते (धनिक) हैं। धमि के धतिरिक्त धीर क्या है जो एक धमकती हुई सतह को धुरव सके धीर प्रत्येक वस्तु को पिबसाकर उसे धाकृतिक्ता धवान कर सके ?

“धीर मैंने कहा किन्तु मर्क बनाने में तुमने धानव भी तो उन्पन

कर दिए हैं जोकि नरक पर राज्य करते हैं। किन्तु देवता न उत्तर दिया, 'अही, नरक पर उनका राज्य है या धर्मिक सम्प्रदाय की न मुक्त।

'बुद्धिमान देवता ! यह मनुष्य एवं अर्ध-मनुष्य की विधियों में परिचित है। यह उन देवा पुत्रों में से एक है जोकि देवदूतों की सहायता के लिए आते हैं तब जबकि ये अनुर मनुष्यों द्वारा धारणित कर लिये जाते हैं।

'मेरे मित्रो और मेरे नाबिको केवल नया ही मूल के प्रकार में रहता है। केवल बिना पत्रकार के ही विज्ञान सागर पार किये जा सकते हैं। केवल यह जोकि रात्रि के साथ सम्बन्धित हो जाता है भार के साथ जागता है, और यह जोकि हिम के साथ जड़ों में सोता है बहार तक पहुँचता है।

'ज्योंकि तुम भी ता जड़ों की भाँति ही हो और जड़ों की तरह ही मरत हो, इसीलिए ता पुष्पा द्वारा तुम्हें ज्ञान प्राप्त हुआ है। और तुम कामाक्ष हा फिर भी तुम्हारे पास तुम्हारी माँ की कामाक्षों में बरवानुओं का संगोष्ठ व्याप्त है।

'तुम दुर्बल हो और तुम निराकार हो, फिर भी तुम विज्ञान विद्वान के बुद्ध का धारण हो और आकाश पर बन अर्ध-चित्रित मूर्त के बुद्ध का भी।

'यं फिर म कहता हूँ तुम काफी मिठी तथा घुमते आकाश के अन्त में (एक) अड़ हा तो हो। और अन्त का कारण तुम्हें प्रकाश के साथ गुप्त करने के लिए उठत हुए देना है, किन्तु मैं तुम्हें (व्यक्तित्व देना में) सज्जानुक्त भी देना है। (पर) मनी उन्हें सज्जानीय देना है। उन्होंने अपने हृदय का देना मह्य छिपा लिया है कि वे मनी नहीं जानती कि उन्हें अपने हृदय का क्या करना चाहिए।

'किन्तु बसन्त अनु घायेना और बसन्त बसन्त सुन्दर है, यह पहाड़ियों और नैशनों की उदाहरण।'

धीरे एक ने जोकि मस्जिद में सेबाएँ कर चुका था बिजली करती हुए कहा 'हमें सिखा दें प्रभु, कि हमारी बाखी ऐसी बन जाय जैसे कि आपके सम्य लोगों के लिए एक भजन एवं सुबोधित रूप है ।'

धीरे प्रभुमस्तपत्र ने उत्तर दिया धीरे कहा 'तुम अपने बच्चों से ऊपर उठोये किन्तु तुम्हारा पक्ष एक संकीर्ण एवं सुगन्ध बनकर रहेगा— एक भीत प्रेमियों के लिए धीरे उन सबके लिए जोकि सेबाएँ हैं धीरे एक सुगन्ध उनके लिए जोकि अपना जीवन एक बनीये में बितायेये ।

किन्तु तुम अपने बच्चों से ऊपर एक सिद्धर तक उठोये वहाँ सिद्धरों के दुकड़ बरसते हैं धीरे तुम अपने हाथों की फँसाये रहोगे जब तक कि वे भर न जायें । जब तुम नीचे बैठ जाओये धीरे सो जाओये, जैसे स्नेह बिद्धिया का बच्चा सफेद बोंसले में सोता है धीरे (फिर) तुम अपने कम का सपना देखोने जैसे कि हसका नीला फूल बहार का सपना देखता है ।

हाँ तुम अपने बच्चों से अधिक बहरे जाओये तुम सोये हुए सोठों के प्रभु को सोच निकालोये । धीरे तुम गहराइयों की मिटठी हुई घाबाओं को बिम्बें कि जब तुम गुन भी नहीं पाते प्रतिष्यनित करती हुई एक छिपी कंबरा हो ।

“तुम अपने शब्दों से महरूे जाओगे ही सब धाराओं से महरूे—
पृथ्वी के हृदय तक और वहाँ तुम उन (ईश्वर) के साथ चलेसे
रहीमे जोकि आकाश-रचना पर भी घुमता है।”

और कुछ साध पश्चात् चिप्यों में से एक ने पूछा “प्रभु हमें
अस्तित्व के विषय में बताइए, और यह ‘होना’ क्या है ?”

और धनमुस्तप्य ने उन (शिष्य) पर एक लम्बी निमाह बारी
और उसे प्यार किया। और (तब) वह खड़ा हो गया और उनसे कुछ
दूर टहलता हुआ चला गया। तब लौटकर उसने कहा “तुम अभीसे में
मेरे माता-पिता से हुए है (ने) भीनित हाथों द्वारा बचना दिये
बद हैं और इसी बारीसे में यह बर्ष क बीज भी मड़े हुए हैं जोकि वायु
के पंखों द्वारा यहाँ लाये गए थे। एक सहस्र बार मेरे माता-पिता यहाँ
बचनासे आवेंगे एक सहस्र बार ही वायु यहाँ बीज लायेगी और
एक सहस्र बार में तुम और ये पुत्र भी एक साथ इसी आदिका
में आवेंगे जैसे कि धर (धामे है) और हम जीवन को प्यार करते
‘होंगे’ हम मृत्यु के सपने देखते ‘होंगे’ और हम मूर्ख की ओर
बढ़ते ‘होंगे’।

‘किन्तु धर का ‘होना’ विज्ञान हुआ है एक मूर्ख के लिए धर
नबी बनना नहीं बसधान बनना है किन्तु दुबल को बेकार करके नहीं
छोटे पंखों के साथ खेलना है किन्तु पिता की तरह नहीं अपितु साथी
बनकर जो उनके सपनों को सीखना चाहता है।

“(और ‘होना’ क्या है ?)

“बूढ़े पुत्र एवं शिष्यों के साथ मरल एव निष्पट व्यवहार करो,
और उनके माय प्राचीन मिहुर के बूल की छाया में बैठो यद्यपि तुम
अभी बहाग के साथ घुमते हो।

“एक कवि को इँडो आदे वह साध नरियों के पार ही खड़ा हो
और उसकी उपस्थिति में सांठि पाओ बिना किसी इच्छा के बिना
किसी सम्बेह के और तुम्हारे आठों पर कोई प्रश्न न हो।

“यह जानो कि साधु और धरती भी भाई-भाई हैं जिनका पिता मारा क्यासा राजा है और उनमें से एक ने दूसरे से केवल एक अणु हले ही अन्न लिया था और इसीलिए हम उसे उत्तराधिकारी जन्तुमान मानते हैं

सुन्दरता के पीछे-पीछे बसो चाहे वह (तुम्हें) पर्वत की बीमार क ही क्यों न ले जाय । यद्यपि उसके पंज लगे हैं और तुम्हारे नहीं पर चाहे वह (उस) बीमार को भी पार कर जाय तो भी पीछा करो, क्योंकि वहाँ सुन्दरता नहीं है वहाँ कुछ भी नहीं है ।

बिना आरक्षिकारी के बनीया बनायो एक संरक्षक के बिना एक गुर का नाम और एक ऐसा बजाना बनायो आकि धामे-जाने धामों ' लिए सबैव जुना रहे ।

“क्या हुआ जो तुम्हें कितनीने लूट लिया या ठग लिया था बोझा या बा गुमराह किया धरती धरती बंगुस में फाँस लिया और उसके बाद तुम्हारी हँसी उड़ाई (क्योंकि दुनिया में यही तो होता है) । जने पर भी तुम अपनी धारणा में से मर्कौ और मुस्कराओ क्योंकि मैंें मामूम है कि एक बहार है जोकि तुम्हारे बपीचे में तुम्हारी पत्तियो नाचने धाएवी और एक घरद है जोकि धंभूरों को पकायेवी और ह भी घाठ है कि यदि तुम्हारी एक खिड़की भी पूर्व की ओर खुलती तो तुम कमी भी रिक्त नहीं होओगे और तुम जानते हो कि वे सब पराब करने वाले बाकु ठन और बोखेबाब आबरयकता के समय म्हारे भाई ही तो हैं और सम्भवतः उस अनुभव नयरी के वासियों के ए, जोकि इस नगर से ऊपर हैं तुम सभी वेंछे ही हो ।

और अब तुम्हारे लिए, जिनके हाथ उन सब वस्तुओं का बनाते हैं जोजते हैं जोकि हमारे दिन और रात के धाराम के लिए धाब एक है”

“होने का धर्म है एक प्रपट उँपलियों वाला जुसाहा बनना, एक मने वाला जो प्रकाश और दूरी को ध्यान में रखता है एक हलबाहा

बनना और यह ध्यान में रखना कि प्रत्येक बोज़ क बोज़ के साथ-साथ तुम एक बजाना छिना रहे हो। एक मद्युमा तथा पिक्कारी बनना हृदय में महर्मा और जानवरों के लिए बया रखते हुए और हमसे नी घबिह बया मनुष्य की मूख एवं पावस्परुताओं के लिए रखते हुए।

“और सबसे ऊपर, मैं यह कहना हूँ मैं चाहूँगा कि तुम प्रत्येक एक-एक (हृदये) प्रत्येक मनुष्य के उद्देश्य में साखीदार बनो क्योंकि इसी प्रकार तुम स्वर्न धपना उद्देश्य पूरा कर सकते हो। मेरे छादिनो और मेरे प्रियो तुच्छ नहीं साहसी बनो संतुषिठ नहीं निस्त्रीण बनो और तब तक जब तक कि मेरी अंतिम बही और (इसी प्रकार) तुम्हाय धन्तिन समय बास्ठव में (मेरा और) तुम्हाय धनन्त सत्त्व न बन जाय।”

और उनमें बालना बन् कर दिया। और वहाँ उन नी-क-नी पर एक महर्मी निस्त्रम्पता छा पर्य, और उनके हृदय उसकी और से छिर गए, क्योंकि वे उसके शब्दों की समझ नहीं पा रहे थे।

और देखो तीन मनुष्य जोकि नाबिक थे समग्र की और जाना चाहते थे वे जिन्होंने मन्दिर में सेवाएँ की थीं धनने ईशवास्य की जाने के इच्छुक थे और उन्होंने जोकि उसके बचपन के सन के मापी थे हाट का रास्ता पसन्द किया। उसके शब्दों के लिए वे सब बहुरे थे इसलिए उन शब्दों की धाबाज इसी प्रकार उसीके पास बापस सीट परी जैसे कि उनके और बिना बर क पखी सरण के लिए स्थान टटोपते हैं। और धसमुत्सष्टा उनस कुछ दूर बगीचे में बना पया, (उसने) उन पर एक बार निपाह भी नहीं खासी।

और उन्होंने धापस में तर्क करना प्रारम्भ कर दिया इसलिए कि धपने (वहाँ से) जाने के लिए बहाना डू डू लें। और देखो वे सब मुझे और प्रत्येक धपने-धपने स्वान को सीट पया (और) इस प्रकार धनमुत्सष्टा धनेकों में एक एवं (सबका) प्रिय छिर धनेता रह पया।

उनमें कदा

अपनी अटारी से नीचे बगीचे में उतरी जहाँ कि रात की मोस में उसका सुबहरी बूटियों को चूमा ।

'रात्रि की निस्तम्बता में रात्रा की बेटी बगीचे में प्रेम सोज निकली किन्तु उसके पिता के विस्तीर्ण साम्राज्य में एक भी नहीं प जो उसका प्रेमी हो ।

'इससे तो यही अफ़सा होता कि वह एक इतबाहे की बेटी होती अपनी निहा एक घेत में पुरी करती तमा सम्झा-समय वरों पर रास्ते के बृक्ष अभाये तथा बस्को की परत में अंगूर के बगीचे की सुगन्ध लिये अपने पिता के घर लौटती । और जब रात्रि घाटी और रात्रि की देरी इस संसार में प्रवेश करती तो वह अपने वरों को जोरी से घाटी की घोर से जाती जहाँ कि उसका प्रेमी उसकी प्रतीक्षा करता होता ।

'अबका वह एक मठ में पुजारिन होती थीर पूष के स्वात पर अपनी हृदय अनाठी जिससे कि उसका हृदय वायु तक पहुँच सके और उसकी घात्मा को दूर्य बना सके—एक शीपक होती, एक प्रकाश को महान् प्रकाश की और अझने के लिए, उन सबके साथ जोकि पूजा करती हैं जो प्रेमी हैं और प्रेमिकाएँ हैं ।

"अबका वह क्यों हाथ बनाई गई एक बूटी स्त्री होती थीर बृक्ष में बैठकर वह सोचती कि उसके जीवन में किसने साम्य किया था ।"

और रात्रि नहरी विचलती गई ; रात्रि के साथ अलमुस्तक्य की अम्बकारमय होता गया और उसकी घात्मा की नामो एक दिन अरबा बादल । तमा वह घोर से बोला—

'भाटी है मेरी घात्मा अपने स्वयं के पके हुए अल से
भाटी है मेरी घात्मा अपने स्वयं के कर्मों से ।

कौन अब भायेगा और कायेगा तथा लुप्त होया ?

मेरी घात्मा अनालक करी है मेरी अरिवा के

कौन अब जानेगा और लियेगा और ठग्या होया

ऐतिस्तान की मर्मी से ?

कास में एक बूझ होता बिना फूल और बिना फल का
 क्योंकि अत्यधिकता की पीडा उमड़ोपन से कहीं अधिक बढ़ती है
 और घमीर का दुःख त्रिमसे कोई पहूण नहीं करता
 कहीं बढ़ा है एक मिछारी की निर्बनता से
 त्रिसे कोई नहीं देता ।

"कास में एक कुर्पा होता मूला एवं मुजसा हुआ
 और मनुष्य मेरे अन्दर परपर फेंकते
 क्योंकि यह अन्धता और आसान है व्यय हो जाना
 अरिषु जीवित बसकर उन्मम बनना
 जबकि मनुष्य उमकी बसत से मुझरे और उमका पान न करे ।

"जात में एक बाँपुटी हाता पैर के नीचे कूबनी हुई
 क्योंकि यह चाँदी के ठार वाली एक बीला होने से अन्धता है ।
 ऐसे यज्ञान में त्रिमके मायिक के टैमसिमी ही नहीं हैं ।
 और त्रिमके बन्ने बहुरे हैं ।

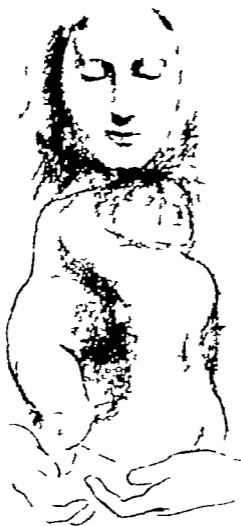
प्रथम सात दिन धीरे सात रात तक कोई धारणी बनीके के निरुद्ध भी नहीं धारणा धीरे धारणी स्मृतियों एवं पीडाओं के साथ वह धारणा ही बना रहा क्योंकि वे भी, जिन्होंने उसकी बातें प्यार तथा वैयर्थ्यपूर्ण सुनी थीं उससे विमुक्त होकर दूसरे दिनों की जोड़ में चले गए थे।

केवल करीमा साईं उसके चेहरे पर खामोशी एक धारणा ही तरह फैली हुई थी इसके हाथों में प्याला धीरे उल्टा ही उसके एकाकीपन धीरे मुख के लिए मदिरा तथा खाना था। धीरे ये वस्तुएँ उसके सामने सजाकर वह अपने रास्ते (बापस) लौट गई।

धीरे धनमुस्तफा ने फिर श्वेत चितार के बूझा का साथ ग्रहण कर लिया धीरे सड़क की धीरे देखता हुआ वह बैठा रहा। जरा देर बाद उसने देखा यानी एक बूझ ऊपर उठकर बाहर बन गई है धीरे वह (बादल) उनकी धीरे बना था रहा है। उस बादल में से निकल कर वे ली-कै-जी (शिप्य) बाहर धारणा दिखाई पड़े, धीरे उनके धारणा-धारणा करीमा पच-प्रदर्शनक बनी बनी धारणा रही थी।

धीरे धनमुस्तफा ने धारणा बढ़कर सड़क पर ही उनसे मेट की, धीरे, वे दरवाजे के धारणा वाकिल हुए। सब-कुछ छींक था यानी वे धारणा एक बच्चे पहले ही धारणा-धारणा रास्ते पर पड़े हों।

वे धारणा धारणा धीरे उन्होंने उनके साथ उनके सस्ते धारणा पर



घण्टे सात दिन और सात रात तक कोई आसानी बपीचे के निकट भी नहीं धाया और अपनी स्मृतियों एवं पीड़ाओं के साथ वह झकेला ही बना रहा क्योंकि वे भी जिन्होंने उसकी बातें प्यार तथा वैयंपूर्वक सुनी थीं उससे विमुक्त होकर दूसरे दिनों की खोज में चले गए थे ।

केवल करीमा घाई उसके बेहरे पर खामोशी एक आबरण की तरह फैली हुई थी उसके हाथों में प्याला और ठलरी भी उसके एकाकीपन और मूढ के लिए मबिरा तथा साता था । और वे वस्तुएँ उसके सामने समाकर वह अपने रास्ते (बापस) लौट गई ।

और अलमुस्तफ़ ने फिर स्वेत बिगार के बूझों का साथ ग्रहण कर लिया और सड़क की ओर देखता हुआ वह बैठा रहा । परा बैर बाव उसने देखा मानो एक बूस ऊपर उठकर बावत बन गई है और वह (बावत) उसकी ओर जाता था रहा है । उस बावत में से निकल कर वे नी-के-नी (शिख) बाहर भाटे बिलाई पड़े, और उनके धाये धामे करीमा पक प्रदर्शक बनी बनी था रही थी ।

और अलमुस्तफ़ ने धामे बढ़कर सड़क पर ही उनके मेट की ओर, वे दरवाजे के अन्दर बाबिल हुए । सब-कुछ ठीक था मानो वे अभी एक बच्चे पक्षे ही अपने-अपने रास्ते पर गये हों ।

वे अन्दर था गए और उन्होंने उसके साथ उसके सस्ते आसन पर



असम्भ्रित, जबकि करीबा ने उनके लिए रोटी और सब्जी परोसी तथा
 तिन मरिच प्यालों में शमी। जब वह हाथ रगौ की तो उनमें प्रभु
 : पूछ और कहा "बहिर मुझे याज्ञा है ता कि जयज जाकर आपके
 लाली का फिर से करने के विद् मरिच से घाई क्योंकि वह नमान्य
 कि नई है?"

धीर उठने करीबा की घोर देखा। उसकी धांग्ना ने एक यात्रा
 उद्य एक दूर-दूर बना हुआ था धीर उठने कहा "नहीं क्योंकि हम
 स्मर के लिए था यही पर्वान्त है।"

धीर "तुम्हेंने सामा-पिया तथा के समुल्ल हुए। जब वह समाप्त
 हुए तो धनकुसुम्य किन्तीर्ण मातर की मीति महुगी एवं बग्ग्ना
 के जाने में सुष्यन की तरह पूल पाबाज में बोला धीर उठने कहा
 "मेरे बहिरको धीर मेरे स्मराहिपी, हमें यात्र जुडा होना पड़ेना।
 एक घण्टे में हम नमानक समुदों पर तैरते रहे है हम अत्यधिक लालू
 पक्षियों पर कई है और हमने जयकर सुष्यन का मुकाबला किया है।
 हमने बूब की पहचाना है किन्तु (एक माघ) बैठकर हमने महाभोज
 की करने है। मनेक समय हम मने रहे है किन्तु हममें राजमी बरुभ भी
 पड़े है। हमने शान्त्व में अत्यधिक सम्भा मकर तय किया है किन्तु
 हम इस युद्ध होने है। तुम रकटके अपने रास्ते पर जाओगे धीर कि
 बनेबा पाने पत्र पर अज्ञान होऊँगा।

"धीर बहिर समुद्र तथा विस्तीर्ण भूमि हमें जुडा करेगी फिर भी
 पुन रात्रि की शाना में हम छापी हाये।

"किन्तु हमने पहल कि हम अपने-अपने कठिन रास्ते पर अज्ञान
 हों, मैं तुम्हें अपने हृदय की फलम तथा (जीवन का) निबोध प्रदान
 करूँगा—

"पुन अपने रास्ते पर गाते हुए बाघी किन्तु प्रत्येक गीत को छोटा
 रली क्योंकि वे ही गीत जोकि सुन्हारे घोडों पर युवा ही मृत्यु की
 घण्ट होते है समुम्भ-हृदय में जीवित रहते।

“एक सुन्दर लय बोड़े शब्दों में कहो किन्तु एक असुन्दर बोड़े शब्दों में भी मत कहा। जिस सुन्दरी के कंधे सूर्य के प्रकाशमण्डले हों उससे कहो कि वह सबेरे की पुत्री है। किन्तु यदि (एक) धम्मा दिखाई पड़े तो उससे यह न कहो कि वह रात्रि के एक है।

‘बामुरी बजाये बाम का ध्यान से सुनो जैसे कि वह बसन्त सुमता है किन्तु यदि तुम समालोचक प्रथमा दोष निष्काशन के लिये सुनो तो अपनी हृत्विद्यों की भाँति बहरे हो जाओ धीर इतनी (निकल जाओ) बितनी कि तुम्हारी सम्पत्ता।

मेरे साथियो धीर मेरे प्रियो, अपने रास्ते पर तुम सम्म म वाले मनुष्यों से मिलो, उन्हें अपने पंख देना (लम्बे) सीवों मनुष्यों से मिलो उन्हें लारेल के हार पहनाना (लम्बे) वाले मनुष्यों से भी मिलो इनकी उपस्थितियों के लिए पुष्प पकड़ियाँ देना धीर तीक्ष्ण जिह्वा वाले मनुष्यों से भी मिलो वे शब्दों के लिए मधु देना।

धीर तुम इन सबसे तथा इनसे भी अधिक से मिलो; मिलने से लयके शायमी सहारे की लकड़ियाँ बचते हुए धीर धर्म का धीरा बचते हुए। धीर तुम्हें अपनी मनुष्य परिदर के शाप पर भाँपते हुए मिलो।

‘समझे की अपनी तीव्रता प्रदान करना, धम्मे की अपनी देना धीर यह ध्यान रखना कि तुम स्वयं अपने को बनी बियाँ को देना क्योंकि वे सबसे अधिक अकरतमन्त्र हैं धीर कोई भी बीज के बिना हान नहीं फैलावेगा जब तक कि वह वास्तव में ही न हो।

मेरे साथियो धीर मेरे प्रियो म तुम्हें हमारे (मेरे धीर तुम्हें बीच के प्यार की गीर्ण्य विनाता हैं कि तुम इन अनसिद्ध रास्तों जाओ जोकि रेमिस्तान में एक-दूसरे पर से कुतरते हैं जहाँ कि

धीर करमोघ (घाब-घाय) घूमते हैं धीर भेड़िये धीर मर्दे मी ।

“धीर मेरी यह बात मार रखो मैं तुम्हें बेना नहीं सिखाता बेना सिखाता हूँ धस्वीकार करता नहीं संतुष्ट करना पड़ाता हूँ धीर मुझने की नहीं समझने की सिखा देता हूँ अपने मोठों पर मुस्कान लेकर ।

“मैं तुम्हें सामोसी नहीं सिखाता अपितु एक पीठ किन्तु अधिक ठंड नहीं ।

“मैं तुम्हें तुम्हारे धनन्त सब का समझता हूँ जिसमें समस्त प्राणी-मात्र व्याप्त हैं ।

धीर यह घासन सं सठ बड़ा हुआ धीर बाहर सीमा बर्षाने में बना बना धीर जबकि सूर्य डूब रहा था यह बिगार के बूझों के सामे में घूमता रहा । धीर ने उसके पीछ-पीछ से जरा दूर हटकर क्योंकि उनके हृदय भाठी हो गए थे धीर अपनी जिह्वाएँ अपने तानुधों से चिपक गई थी ।

केबल करीमा जबकि यह सब मामाम जमा कर चुकी उसके पास आई धीर बोली “ब्रह्म, प्राण मुझ साम से चले जिसमे कि मैं कम के लिए धीर प्राणे प्राणकी यात्रा के लिए मानन बनाती रहूँ ।”

धीर उमने करीमा की धीर बेसा ऐसी दृष्टि से जिसमें इस सघार के परिचित धीर अनेक सघार दिखाने पड़ते थे धीर उसने कहा “मेरी बहन धीर मेरी दिये यह तो हो चुका समय के प्रारम्भ से ही । भोजन धीर मधिरा ठो ठीमार है, कम के लिए, जैसे कि बीते कम के लिए थी धीर प्राण के लिए मी ।

“मैं जाता हूँ किन्तु यदि मैं एक सत्य को लेकर बना जाऊँगा जिसे सभी तक भावाज नहीं मिमी है तो बड़ी सत्य फिर मुझे सोनेपा धीर इकट्ठा कर लेया, चाहे मेरे समस्त सब अन्त सामोसी में बिखरे पड़े हों । धीर फिर मुझे तुम्हारे सामने घाना होया कि मैं उस वाली

“एक सुन्दर सत्य बोड़े धर्मों में कहो किन्तु एक असुन्दर सत्य बोड़े धर्मों में भी मत कहो। जिस सुन्दरी के केश सूर्य के प्रकाश में चमकते हों उससे कहो कि वह सबेरे की पुत्री है। किन्तु यदि तुम्हें (एक) धम्पा दिखाई पड़े तो उससे यह न कहो कि वह रात्रि के साव एक है।

‘बांसुरी बजाने वाला का ध्यान से सुनो जैसे कि वह बसन्त को सुनता है किन्तु यदि तुम समाजोपक धर्मवा शोष गिराने वाले को सुनो तो धपनी हड्डियों की भाँति यहरे हो जाओ और इतनी दूर (निकल जाओ) जितनी कि तुम्हारी क्षयना।

‘मेरे साक्षियों और मेरे प्रियो अपने रास्ते पर तुम सम्ब नाखूनो वाले मनुष्यों से मिलोगे उन्हें धपने पंख देना (सम्भे) धीरों वाले मनुष्यों से मिलोगे उन्हें लारेल के द्वार पहुँचाना (सम्भे) पंखों वाले मनुष्यों से भी मिलोगे उनकी रँदसियों के लिए पुष्प की पंजुड़ियाँ देना और तीखी जिह्वा वाले मनुष्यों से भी मिलोगे उनके धर्मों के लिए मनु देना।

‘और तुम इन सबसे तथा इनसे भी अधिक से मिलोगे; तुम्हें मिलेंगे लंगड़े धारमी सहारे की लकड़ियाँ बेचते हुए और धंधे बेचने का धीसा बेचते हुए। और तुम्हें बनी मनुष्य मन्दिर के द्वार पर भीख माँगते हुए मिलेंगे।

‘लंगड़े को धपनी तीव्रता प्रदान करना, धम्भे को धपनी दृष्टि देना और यह ध्यान रखना कि तुम स्वयं धपने को धनी भिखारियों को देना क्योंकि वे सबसे अधिक अकरतमन् हैं और कोई भी पुष्प भीस के लिए हाथ नहीं फैलायेगा जब तक कि वह वास्तव में ही परीस न हो।

‘मेरे साक्षियों और मेरे मित्रों में तुम्हें हमारे (मेरे और तुम्हारे) बीच के प्यार की सीमाब खिसाता हूँ कि तुम उन धवणित रास्तों पर जाओ जोकि रैनिस्तान में एक-दूसरे पर से पुनरते हैं जहाँ कि धेर

धीर श्रयोध (साध-साध) बुझते हैं धीर भेदिये धीर भईं भी ।
“धीर मेरी वह बात याद रखो मैं तुम्हें दना नहीं मित्रता सेना
मित्रता है अस्वीकार करना नहीं संतुष्ट करना पड़ा है धीर
मुझने की नहीं समझने की गिला देता है अपने धोटी पर मस्झान
लेकर ।

“मैं तुम्हें आमोपी नहीं मित्रता अपितु एक चीज किन्तु अधिक
ठेक नहीं ।

“मैं तुम्हें तुम्हारे अनन्त सत्य को समझता हूँ त्रिममें समस्त
प्राणी-मात्र व्याप्त है ।”

धीर वह घातक से उठ खड़ा हुआ धीर बाहर सीमा बनीचे में जाता
जया धीर जबकि सूर्य डूब रहा था वह बिनार के बुझों क माये में
सुमना रहा । धीर ने उसके पीछे-पीछे प जरा दूर हटकर क्योंकि
उसके हृदय मारी हो गए थे धीर उसकी मित्रता अपने तातघों से
बिपक गई थी ।

केवम करीमा जबकि वह सब सामान जमा कर चुकी उसक पास
घाई धीर बोली “प्रभु, धान मुझे साथ ले जयें त्रिममें कि मैं कम के
लिए धीर धामे धानकी मात्रा के लिए मात्रम बनाती हूँ ।”

धीर उसत करीमा को धीर दना ऐसी दुष्टि से त्रिममें इन सुधार
क अतिरिक्त धीर अपनेक संसार दिव्या पड़ते थे धीर उसत कहा
“मेरी बहुत धीर मरि त्रिय वह टा हा चुका समय के आरम्भ से
ही । मोरन धीर मरिठ ठा तैपान है कम के लिए, त्रिय कि बीज कम
के लिए को धीर धाक के लिए भी ।

“मैं जाना हूँ किन्तु यदि मैं एक सत्य का लेकर जना जाऊँगा
त्रिममें धनी एक जाबाब नहीं निर्य है, टा बई सत्य टिप मुझ कोरेगा
धीर दकटा कर गया जाईं मेरे समस्त सत्य अनन्त सामाशी में बिखरे
पड़े हों । धीर टिप मुझ तुम्हारे समस्त जना हुआ कि मैं उस जगती

उठने कहा

घाय बोल सकूँ जोकि उन पसीम सामोहियों के हृदय में फिर से उत्पन्न हुई है ।

धीरे धीरे जग-धी भी सुन्दरता यह जायगी जिसे कि मेरे तुम्हें नहीं बताया है तो मुझे फिर पुकार लिया जायगा ही मेरा स्वयं का नाम लेकर ही—प्रममुस्तका । धीरे में तुम्हें एक संकेत हुआ जिसे कि तुम समझ जाओगे कि मैं जो कुछ कूट गया था उसे बताये के लिए फिर से था गया हूँ क्योंकि ईश्वर अपने को मनुष्य से छिपाने रखता धीरे अपने शब्दों को मनुष्य के हृदय की बुद्धियों में डके रखना नहीं चाहेगा ।

मैं मृत्यु के परचात् भी बीडेमा धीरे में तुम्हारे कानों में याडेमा विद्यास समझ की लहर जो जापस के जाबनी के परचात् भी मैं तुम्हारे पास पर बैठूँगा यद्यपि बिना शरीर के धीरे में तुम्हारे साथ तुम्हारे खेतों को याडेमा एक अदृश्य धारमा बनकर ।

मैं तुम्हारे पास तुम्हारी धाम के किनारे बैठूँगा एक अदृश्य प्रतिधि बनकर ।

मृत्यु तो कुछ भी नहीं बरसती परदे के प्रतिरिक्त जोकि हमारे बेहरे पर पड़ा रहता है ।

बढ़ई फिर भी एक बढ़ई ही रहेगा

हलवाहा फिर भी एक हलवाहा ही रहेगा

धीरे वह जोकि वायु के लिए भीत बाठा है

फिर भी गतिबान ग्रहों के लिए घायेगा ।”

धीरे शिष्य ऐसे सामोह हो गए जैसे कि पत्थर धीरे अपने हृदयों में छिपकने लगे क्योंकि उसने कहा था ‘मैं बाठा हूँ ।’ किन्तु टिप्पणी में भी प्रभु को रोबने के लिए अपना हाथ बाहर नहीं निकालता धीरे न ही कोई उसके परबिहनों पर घाने बढ़ा ।

धीरे प्रममुस्तका अपनी माँ के बगीचे से बाहर निकल आया ।

उसके पैर लीज मति से धामे बढ़ रहे थे, धीर ने सब स्थितिरहित से ठेक हुआ में उड़ती हुई पत्ती की मति वह उनसे दूर जाता गया धीर सम्होंने देखा मानो—एक पीला प्रकाश लेंबाई पर बढ़ रहा हो ।

धीर ने नी-कै-नी सड़क पर अपने-अपने रास्ते पर चल पड़े । किन्तु करीमा अभी भी जमा होती रात्रि में खड़ी रही धीर उसने देखा कि किस प्रकार प्रकाश तथा तारों की जगमगाहट एक हो जाती है धीर अपनी असहायता तथा एकांतता को उसने ये सम्म कहकर साम्बता दी "ये जाता हूँ किन्तु यदि मैं एक सत्य को लेकर जाता जाऊँगा जिसे अभी तक मानाज नहीं मिली है तो वही सत्य फिर मुझे खोजेगा धीर इकट्टा करेगा धीर फिर मैं जाऊँगा ।"

घौर अब सम्झा हो गई थी ।

घौर वह पहाड़ों पर सहोच गया । उसके पैर उसे कुहरे के पास से
प्राये थे । वह चट्टानों तथा स्वेत सिरों के कुम्हों के बीच जोकि अब
वस्तुओं से लिये हुए थे खड़ा था घौर वह बोला—

ओ कुहरे, मेरे भाई, श्वेत स्वास अभी तक

किसी प्रकार में नहीं बनी है

मे तुम्हारे पास वापस आ गया हूँ एक श्वेत

स्वास एवं ध्वनिबिहीन बनकर—

एक शब्द भी अभी तक नहीं बोला ।

ओ कुहरे, मेरे पंखों वाले भाई कुहरे, हम अब एक साथ हैं

घौर साथ ही रहेंगे जीवन के दूसरे दिन तक,

कौनसा प्रमाद तुम्हें घोर की बू ब बनाकर बपीये में लिटावेगा

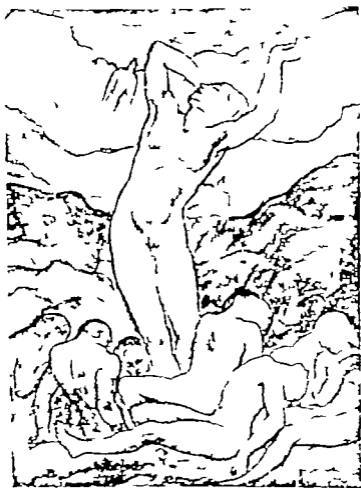
घौर मुझे एक बच्चा बनाकर एक स्त्री के बक्ष-स्वस्त पर,

घौर हम (एक-दूसरे को) याद रखेंगे ।

ओ कुहरे, मेरे भाई, मैं वापस आ गया हूँ

एक हृदय अपनी गहृच्छयों में मुनता हुआ

जैसा कि तुम्हारा हृदय



एक बड़कनी हुई धाकीला और तुम्हारी निरह स्वयं धाकीला
की भाँति

एक विचार जो धनी तक इकट्ठा नहीं हुआ वैसा कि तुम्हारा
विचार ।

‘धो कुहरे, मेरे भाई मेरी जाँ के पहल पुत्र
मेरे हाथ धनी की उन बीजों की पकड़े हुए हैं
जोकि तुमने मुझे बिज्जरने के लिए दिये थे
और मेरे घोट सीये हुए हैं उस पति पर
जोकि तुमने मुझे जाने के लिए दी थी
और मैं तुम्हारे लिए कोई फल नहीं लाया और न ही तुम्हारे पास
मैं कोई प्रतिफल लेकर आया हूँ
क्योंकि मेरे हाथ धने से और मेरे घोंठ आमोष ।

‘धो कुहरे, मेरे भाई धन्यद्विक प्रम मेने बुनिया से किया
और बुनिया ने मुझ (वैसा ही) प्यार दिया
क्योंकि मेरी समस्त मुस्कटाहटें बुनिया के घोंठों पर थीं
और उनके समस्त घोंठु मेरी धीबों में ।
किर भी हमारे बीच एक आमोषी की खाई थी
जोकि बह (बुनिया) नहीं भरना चाहती थी
और जिसे मैं पार नहीं कर सकता था ।

‘धो कुहरे, मेरे भाई मेरे धमर भाई कुहरे,
मेने पुराने पीठ अपने बच्चों का सुताये
और समूहों में मुने, और उनके चेहरे पर धारधर्म व्याप्य वा
किन्तु कस ही वे मकायक पीठ भूम जाईये
और मैं नहीं जानता था कि किसके पास तक

बापू नील नहीं है जायसी ।
 धीर यद्यपि वह (नील) मेरा धपता नहीं था
 किन्तु वह मेरे हृदय में समा गया
 धीर मेरे श्रोत्रों पर कुछ देर के लिए खेकता रहा ।

ओ कुहरे, मेरे भाई यद्यपि यह सब कुहर गया मैं धाम्नि में
 (मेरे विचार में) यह काफ़ी था कि उनके लिए पाया जाय
 जोकि काम ले चुके हैं ।

धीर यद्यपि यह पाया मेरा धपता नहीं है
 परन्तु वह मेरे हृदय की सबसे गहरी धाकीला है ।

ओ कुहरे, मेरे भाई, मेरे भाई कुहरे

मैं तुम्हारे साथ धब एक हूँ ।

धब म स्वयं 'मैं' नहीं रहा ।

धीरारों गिर चुकी हैं

खडीरों टूट चुकी हैं

मैं तुम्हारे पास धाम के लिए ऊपर बठ रहा हूँ एक कुहुरा बनन
 धीर हम साथ-साथ नागर के ऊपर तैरने जीवन मे दूसरे धिन e
 बाबकि प्रभाव तुम्हें धीर ही बू द बनाकर बनीके में लिटा देगा,
 धीर मुझे एक बच्चा बनाकर एक स्त्री के बध्मनधन पर ।"

